विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों की सूची

1. मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में विकासोन्मुख नारी
2. मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी के विविध रूप
3. मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी
4. मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी संवेदना
5. मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी चेतना
6. मेहरून्निसापरवेज की कहानियों में व्यथा–संघर्ष–चेतना की अभिव्यक्ति
7. मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में स्त्रीयों का शोषण और नारी मुक्ति संघर्ष

1.विषयः मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में विकासोन्मुख नारी

A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences, Vol. 12, Issue 1, Jan 2022 Impact Factor 8.049 ISSN: (2231-4571) www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

2.विषयः मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी के विविध रूप

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM) Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, Impact Factor value 7.52 pp: 812-815 www.ijhssm.org

3.विषयः मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी

International Conference Vimal Vimarsh, A multi-disciplinary Referred Research Journal Vol.1(Special Edition) Year:6,2018 ISSN No:2348-5884 www.vimalvimarsh.com

4.विषयः मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में विकासोन्मुख नारी

Two day National Seminar on Effort of poets for Social transformation conducted by Centre for studies of social exclusion & inclusive policy, SK University, Ananthapuram ISBN No:978-93-5346-655-8, 25th & 26th March, 2019.

5.विषयः मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी संवेदना

Two day International Seminar on Feminism in Contemporary Hindi, Kannada and English Literature conducted by Sri Gavisiddeswara Arts, Science and Commerce College, Koppal, Karnataka State on 19-3-2017.

5.विषयः मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी चेतना

Two day International Conference on Sahity Sudhaarvaadi drustikon conducted by Sir C.R.Reddy College(A), Eluru on 14th & 15th Dec,2018

6.विषयः मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में व्यथा–संघर्ष–चेतना की अभिव्यक्ति

Two day International Seminar on Adhunaatan Hindi katha Saahity conducted by Lakshmi Venkatesh Desai Degree College, Raichur, Karnataka on 18-03-2017.

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 12, Issue 1, Jan 2022 Impact Factor 8.049 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में विकासोन्मुख नारी

जे.कृश्णवेणी, षोध विद्यार्थिनी,हिन्दी विभाग, आचार्य नागार्जुन विष्वविद्यालय, गुन्टूर
आचार्य श्री के.श्रीकृश्णा, विभागाधिपति, हिन्दी विभाग, नागार्जुन विष्वविद्यालय, गुण्टूर

हिन्दी कहानी की सुदीर्घ परम्परा रही है । ऋृग्वेद से लेकर वर्तमान समय तक की कहानी श्रृजन में जितना योगदान पुरूशों का है, उतना महिलाओं का भी है । ''वैदिक युग से ही नारी साहित्य के क्षेत्र में पुरूश का साथ देती आई है । मध्ययुगीन अनेक कवइत्रियों ने अपने गीतों से साहित्य –कानन को मुखरित किया है ।

वर्तमान युग महिला उत्थान का युग माना जाता है । जीर्ण परम्पराओं, संस्कारों तथा समाज की रूढिवादी प्रथाएँ उनपर होनेवाले हर अत्याचारों को सहती आज नारी कही न कही विद्रोह करी नजर आ रही है । वे अपना हक पाने की हकदार हो गयी है । वह पुरूश की तुलना में किसी भी क्षेत्र के पीछे नहीं है । आज बडी मात्रा में महिला घर परिवार सभॉलकर कामकाजी महिला बन गयी है । साहित्य के क्षेत्र में महिलाएँ पीछे नहीं है । वह अपनी व्यथा या नारी समाज की पीडा को बयान करती नजर आ रही है । वैसे कहानी साहित्य की बात करे तो कहानी विधा का जन्म ही बंग महिला से हुआ माना जाता है । यह कार्य निरंतर चल रहा है ।

तात्पर्य वर्तमान समय में महिलाओं ने अपनी विद्वत्त सिद्व की है । कहानी साहित्य में नारी को जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है वह अनेक रूपों में हैं । नारी को देवी, माता, बहन, सहचारिणी, राणी, दासी, नौकरानी तथा विभिन्न पदों पर काम करती नारी को दर्षाया गया है । लेकिन नारी को हमेषा पुरूश सत्तावादियों ने कमजोर समझा और उनका षोशण करता रहा । यह परम्परा कई जमाने से चल रही है । बाल–विवाह, सती प्रथा, विधवा विवाह, पर्दाप्रथा, देवदासी बेमेल विवाह इन कुरीतियों की षिकार नारी होती रही है । इन कुरीतियों के विरोध में आधुनिक तथा साहित्य सामने आया और साहित्यकारों ने इसके विरोध में भरसक कोषिष की । भारतेन्दु हरिष्चन्द्र को इसका श्रेय देना चाहिए ।

साठोत्तरी साहित्य यात्रा में कई महिला लेखिकाओं ने कहानी पर कलम चलायी है । जिनमें महत्वपूर्ण है– बंग महिला, उशा प्रियंवदा, कृश्णा सोबती, मन्नु भंडारी, सूर्यबाला, निरूपमा सोबती मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, इन्दुबाली, षिवानी मृणाले पाण्डे, ममता कालिया तथा मेहरून्निसा परवेज । इन सब कथाकारों में मेहरून्निसा परवेज एक ऐसी कथाकार है, जिन्होंने कई परम्पराओं में लेखन किया है । एक तो नारी की व्यथा तथा बस्तर जिले की आदिवासी नारी पीडा को व्यक्त किया है । उसी प्रकार मेहरून्निसा परवेज ने मुस्लिम नारियों के दु:ख दर्द को भी बयान करने का प्रयास किया है ।

मेहरून्निसा परवेज ने साहित्य की कई धाराओं में साहित्य श्रृजन किया है । कहानी, उपन्यास तथा अन्य साहित्य के साथ–साथ 'समर लोक प्रत्रिका' का सम्पादन भी करती रही है । इनके साहित्य का मुख्य उद्वेष्य नारी की समस्याओं पर प्रकाष डालना तथा मध्यप्रदेष के आदिवासी बस्तर लोगों के जीवन को मुख्य धारा में लाना । इस तरह मेहरून्निसा परवेज साहित्य श्रृजन के साथ–साथ समाजसेवी का भी

कार्य करती रही है ।

आजादी के बाद बदलते परिवेष ने नारी को गहराई से प्रभावित किया है। । जिससे नारी की स्वतंत्रता के कई अध्याय खुले हैं । नारी ने खुली हवा में सांस लेना सीखा और सामाजिक परिर्वतन की जिम्मेदारी भी अपने कंधे पर ली । युगों युगों से नारी दबी, कुचली गई थी । वह अब अपनी अस्मिता की खोज में निकल चुकी हैं । अब वह अपने अधिकारों की सुरक्षा करना चाहती है । इसलिए उसने अपने हाथों में लेखनी पकडी हैं । जिससे वह भी समाज का अंग बन सकें । तात्पर्य स्वतंत्रोत्तर काल में अनेक महिला लेखिका सामने आयी । और अपनी पहचान बनायी । इस काल की प्रमुख लेखिकाओं में मेहरून्निसा परवेज का स्थान अग्रणी है। क्यांकि उन्होंने नारी की भावनाओं के चित्रण के साथ–साथ नारी को केंद्रित मानकर उसे अपने साहित्य यात्रा में प्रस्तुत किया है ।

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में नारी मन की विवषता तथा पुरूशी ईर्श्या, गलत पुरूश, षक, माता पिता द्वारा बेटी की उपेक्षा, अपमान, आपसी रिष्तों में तनाव, विधवा, विष्वासघात, प्रेमिका अपनों के द्वारा ही लडकी को पेषे पर बैठने के लिए मजबूर करना, अनमेल विवाह नौकरी पेषा करनेवाली औरत का माता पिता द्वारा ब्याह न करना, पर पुरूश से प्रेमसम्बन्ध स्थापित करना ऐसी अनेकानेक नारी चरित्रों का उद्घाटन किया है । अब हम मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में आयी हुई नारी के विविध रूपों की चर्चा किया गया है । मेहरून्निसा परवेज आतरजातीय विवाह को मानती है । उनकी कहानियों में वह अपनी भावना को व्यक्त किया है । जब मेहरून्निसा परवेज भगीरथ प्रसाद मिश्र से आंतरजातीय विवाह किया तब भी उन्हें काफी अवहेलना सहनी पडी ।

मेहरून्निसा परवेज अपने कथा साहित्य में कन्या का रूप विवाहपूर्व नारी की स्थिति को ''सिर्फ एक आदमी'' नामक कहानी में सुमी के द्वारा वर्णन किया है । आज समाज में सुमी जैसी कन्याएँ 'जो माता–पिता के बगैर कुछ भी नहीं । उन्हें विवाह के लिए अपने परिवार पर ही निर्भर रहना पडता है । लडकी को भारतीय समाज बोझ मानता आया है । लेकिन अब स्थितियॉ बदली हैं । नारी अब षिक्षित होकर नौकरी पेषा करती हुई परिवार की जिम्मेदारी उठाने लगी है । मेहरून्निसा परवेज ने अपनी कहानियॉ 'विद्रोह और सजा' विवाह पूर्व पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिए संघर्श करती नारी का चित्रण किया है । 'विद्रोह' में नीना और 'सजा' में उमा जब कमाने लगती है तो घरवाले उन्हें षादी करना नहीं चाहते हैं ।

मेहरून्निसा परवेज ने विवाहपूर्व प्रेम संबंन्धों को रीति परम्पराओं के अनुसार ही चित्रित किया है । जिससे नारी को आदर्ष की ओर ले जाने का प्रयास किया है । 'कानीबाट' कहानी में आदिवासी जीवन झॉकी प्रस्तुत की है । 'कानीबाट' कहानी की नायिका दुलेसा प्यार में विफल होकर मॉ बननेवाली है । तो नायक रामु उस बच्चे को अपना नाम देने को तैयार होता है । मेहरून्निसा परवेज के कहानियॉ 'ओस में डूबा गुलाब और रेगिस्तान' में विवाहेतर प्रेमसंबंधो को चित्रण किया है । क्योंकि अब समय बदल गया है । नारी को भी अपने अधिकार चाहिए ।

नारी अब केवल भोग्या बनकर नहीं जीना चाहती है । वह अपने तरीके से जीना चाहती है । मेहरून्निसा परवेज के साहित्य में भी विवाहपूर्व या विवाहेतर यौन सम्बन्धों का चित्रण दिखाई देता है । इनकी 'चुटकी भर समर्पण' और 'आकाष नील' कहानियों में इस प्रकार का वर्णन है । षिक्षा के प्रचार

प्रसार के कारण अब सारे सामाजिक संदर्भ बदलते नजर आ रहे हैं । एक समय था जब लडका लडकी से बात तक नहीं कर सकता था लेकिन अब यह फैषन बनता जा रहा है । विवाह जन्म जन्मान्तर का संबंध होता था लेकिन अब किसी भी क्षण इन संबंधों को तोडा जा सकता है । तात्पर्य है कि मेहरून्निसा परवेज ने विवाहेतर प्रेम सम्बन्धों को खुले तौर पर महत्व दिया है । इसलिए 'पाखी' तथा 'तरू' जैसे स्वच्छन्द पात्रों का चित्रण कर नारी को एक नये आयाम तक पहुॅचाने का प्रयास किया है ।

प्रेम के कारण ही परिवार की बुनियादी टिकी हुई हैं । ममता, दया, सहानुभूति, वात्सल्य के आधार पर प्रेम को प्रकट किया जा सकता है । नारी प्रेम के अनेक रूपों को लेकर जीती जाती हैं । वह बहन, बेटी, मॉ, बहु, सास, दीदी ऐसे अनेक रूपों के साथ बलिदान करती रहती है । वह केवल देना जानती है । वह दूसरों के लिए जीती है । इसलिए वह दूसरों के लिए बलिदान करती है । ' अयोध्या से वापसी' मेहरून्निसा परवेज की ऐसी ही कहानी है ।

मेहरून्निसा परवेज ने सारी महिलाओं की अग्रदूत बनकर इनकी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है । विवाहपूर्ण नारी विवाहेतर प्रेम सम्बन्धों, विवाहेतर यौन सम्बन्धों तथा प्रेम के लिए त्याग और बलिदान करनेवाली नारियों का चित्रण हुआ है । तात्पर्य मेहरून्निसा परवेज ने नारी मन को विषिश्ट दृश्टि से परखा हैं और नारी हृदय की पर्तों को खोला है । जिसमें लेखिका सक्षम हैं ।

मेहरून्निसा परवेज नारी की पीडा को अपनी अस्मिता का विशय बनाया । मेहरून्निसा परवेज पर क्रांति के बीज हैं जो भारतीय समाज की सडी–गली परम्पराओं को त्यागकर आंतरजातीय विवाह को मान्यता देती हो उसी प्रकार समाजसेवा के रूप में आदिवासी लोगों के बीच जाकर उनका बुरी परम्पराओं के चैंलेज देकर उनका मत परिवर्तन करना ।

———

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी के विविध रूप

जे.कृष्णवेणी, शोधविद्यार्थिनी,नागार्जुन विश्वविद्यालय,गुण्टूर
श्री के.कृष्णा, विभागाधिपति, हिन्दी विभागए नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर

Date of Submission: 02-04-2023 Date of Acceptance: 12-04-2023

रूपरेखाः

1.प्रस्तावना
2.भारत में नारी का स्थान
3.भारत के समकालीन महिला कहानिकारों में परवेज का स्थान
4.मेहरून्निसा परवेज का व्यक्तित्व और कृतित्व
5.परवेज की कहानियों का परिचय
6.परवेज की कहानियों में चित्रित नारी व्यथा
7.परवेज की कहानियों में नारी–संघर्श–चेतना की अभिव्यक्ति
8.उपसंहार

''''''''

भारत में नारी का स्थान

भारतीय समाज में प्रारंभ से ही नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । वह दैवी तथा पूज्या है । मनु के शब्दों में, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता' अर्थात् जहॉ नारी का सम्मान होता है, वहॉ देवता निवास करती हैं । नारी समाज का निर्माता है । भारत में प्राचीन वैदिक काल में स्त्री को पुरूश के ही समान अधिकार प्राप्त थे । वह अपने इन अधिकारों का उपभोग भारत में मुस्लिम षासन के स्थापित होने से पूर्व तक करती रही । पर मुस्लिम षासन काल में, नारी का व्यक्तित्व घर की चार दीवारी तक सीमित हो गया । ब्रिटीष षासन काल में भी नारी पराधीन की स्थिति में रही । तब से लगातार उसकी स्थिति दिन–प्रतिदिन खराब होती चली आयी । पुरूश के मन में स्त्री के प्रति हीनता की भावना दिन–ब–दिन बढती गयी । फलतः स्त्री के प्रति उत्पीडन आजीवन चलनेवाली एक सामाजिक रीति बन चुकी है । पहले–पहल वह बाल–विवाह, विधवा विवाह निशेध, षिक्षा से वंचित, विधवाओं का अभिषप्त जीवन, परदा प्रथा आदि समस्याओं से पीडित थी । स्वातंत्र आने के बाद कुछ समाज सुधारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप स्त्री षिक्षा, बाल–विवाह नियंत्रण, विधवा पुर्नविवाह आदि समस्याएँ कुछ हद तक दूर हो गयी । पर उसके प्रति हीनता की भावना पर स्वतंत्रता के पष्चात नारी से संबंधित सामाजिक सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियॉ परिवर्तित होती गयी । पर उसके प्रति हीनता की भावना और भी बढ गयी । वह हर दिन जिन्दगी और मौत के बीच में जूझ रही है । वह पुरूश के लिए एक खिलौना समझा जाने लगा । उसे अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं हैं । दहेजप्रथा, वेष्यावृत्ति, मानसिक षोशण, बलात्कार, भाई–बन्धुओं से षोशण, अनमेल–विवाह आदि समस्याओं से वह पीडित हैं ।

भारत के समकालीन महिला कहानिकारों में परवेज का स्थान

साहित्य समाज का दर्पण होता है । याने जैसा समाज रहता है वैसा साहित्य । साहित्यकार समाज में रहता है । समाज में वे जो अनुभव करता है, या देखता है । उन्हें अपने साहित्य में प्रतिबिंबित करता है । समाज के विकास के साथ–साथ साहित्य में भी विकास होता रहता है । साहित्यकार सामाजिक यथार्थ के समर्थक होते हैं । समाज में होनेवाली घटनाओं के पता तत्कालीन साहित्य के द्वारा ही चलता है । आधुनिक काल के समाज की अनेक विकृतियों में जातीय संघर्श और वर्णव्यवस्था जैसी सामाजिक कुरीतियॉ मौजूद हैं । समाज में अग्रवर्ण आधिपत्य चलाते थे । अस्पृष्यता का भयंकर रोग भी समाज में था । साठोत्तरी कथाकारों ने इन समस्याओं पर साहित्य लिखा करते थे । इसी समय में समाज में और एक भयंकर समस्या भी थी वह भी 'नारी उत्पीडन' या नारी षोशण । इसी समय साठोत्तर कथा जगत में अनेक महिला कथाकारों का उदय हुआ है, जिन्होंनं देष में व्याप्त निम्न वर्ग की षोशित–सामाजिक व्यवस्था और निम्न मध्यवर्गीय नारियों की दर्द भरी वाणी एवं पुकार को पहचान लिया, और वे स्वयं अनुभव किये दुख दर्दों को आधार बनाकर उन्होंने साहित्य लिखे और अपने कथा साहित्य के द्वारा उन परिस्थितियों को बदलना भी चाहा । इनमें कृश्ण सोबती, , मन्नूभडारी, उशा प्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज, कृश्णसोबती, निरूपमा सोबती, षषिप्रभा षास्त्री, कृश्ण सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सूर्यबाला, मृणाल पांडे, कृश्णा अग्निहोत्री, नासिरा षर्मा, चित्रा मुद्गल आदि उल्लेखनीय है । जीवन की हर परिस्थिति से गुजरने के पष्चात उन परिस्थितियों से अनुभूत क्षणों को स्मृति में संजोकर उन्हें अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त करने में ये लेखिकाएँ बहुत हद तक सफल हुई है । सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों और आधुनिकता के मोहपाष में पडे

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

मानव की रूग्ण मानसिकताओं का जीवन्त चित्रण इनके कथा साहित्य में मिलता है ।

मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की कथा लेखिका श्रीमती मेहरून्निसा परवेज इन महिला कथाकारों में अग्रगण्य है । उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है, मेहरून्निसा परवेज अपने लेखन के परिवेष को व्यक्त करते हुए कहती है कि '.....पुरानी मान्यताओं और गॉधीवादी विचारधारा को ताक पर दिये बैठी है । वातावरण में एक अजीब–सी भयावहता और दिग्भ्रमित आतंक फैला हुआ है । बेईमानी, घूसखोरी, भ्रश्टाचार और भाई–भतीजावाद की जहर लोगों के खून में मिल गया है ।' ऐसी स्थितियों में तत्कालीन नारी षोशणा की परिस्थितियों से प्रभावित होकर वह अपनी लेखन षुरू किया है । उन्होंने कहानी, उपन्यास, लेख एवं संस्मरण तथा अन्य विधाओं के श्रृजन के साथ 'समरलोक' पत्रिका का संपादन भी करती रहती है ।

मेहरून्निसा परवेज का व्यक्तित्व और कृतित्व :

साहित्यकार समाज में रहता हैं । अपनी लेखकीय प्रतिभाएँ समाज को देखकर ही विकसित होते हैं । जीवनानुभवों का अंष उनके रचनाओं में करी उतरता है । अतः साहित्यकार के जीवन को उनके रचनाओं से बाहर निकालकर नहीं देखा जा सकता है । मेहरून्निसा परवेज की लेखनी के आंतरिक मर्म को पहचानने के पहले उनके जन्म एवं जीवनगत परिवेष समझना जरूरी है, क्योंकि तब ही उनके व्यक्तित्व से प्रभावित कृतित्व को अच्छे ढंग से पहचान सकते हैं ।

मेहरून्निसा परवेज का जन्म 10 दिसंबर, सन् 1944 को मध्यप्रदेष में एक चलती बैलगाडी में हुआ । इतिहास प्रसिद्व नूरजहॉ का जन्म भी इसी प्रकार हुआ । जन्म घटनाओं की विषेशता एवं समानता के कारण मौलाना साहब ने उसे मेहरून्निसा नाम रखा था । घर के आसपास के लोग नदियॉ नाम से पुकारते थे । श्रीमती मेहरून्निसा परवेज जी सुसंस्कृत परिवार की धनी लडकी थी । उनकी माता षाहजादी बेगम मुगल घराने की थी और पिता अब्दुल हमीरखान डिप्टी कलेक्टर थे । अरबी, उर्दू और हिन्दी भाशाओं के प्रति रूची अपने मॉ से ही मिली । और साहित्य लेखन क रूचि अपने पिता से ही मिली । वह अपने पिता से ही प्रभावित हुई। । अपने पिता के पास कई पुस्तकें रहते थे । अपनी प्रगतिषील विचार धाराओं के कारण पिता ने पर्दा प्रथा और धार्मिक कट्टरपन का विरोध किया । पिता का रहन–सहन और आचरण व्यवहार पाष्चत्य सभ्यता से प्रभावित था । इसलिए सामंतवादी मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी नदिया ने धार्मिक बाह्याडंबरों को प्रधानता नहीं दी । उनके छोटे भाई अब्दुल रहीम खान है, जो उच्च षिक्षा पाकर मध्यप्रदेष में सरकारी अफसर है ।

मेहरून्निसा परवेज अधिक पढी–लिखी नहीं थी, लेकिन अनुभव संसार उनका षैक्षिक केन्द्र था । जीवन के अनुभवी की डिग्रिया साहित्य श्रृजन का आधार बन गयी । अपनी अधूरी षिक्षा के बारे में उन्होंने कहा है कि 'मुझे इतनी तालीम मिली कि मैं अपनी साहित्य लिख सकती हूँ । और इतनी भी तालीम नहीं मिली कि मैं अपनी जिन्दगी के लिए नौकरी कर सकती हूँ ।' बचपन में व्याकरणिक षिक्षा उनके लिए कठिन अवष्य था, किन्तु उन्होंने रट्टू तोते की तरह उन्हें कंठस्थ कर लिया था जिसने उसके जीवन को अनुषासन का पाठ सिखाया । बचपन में बात–बात पर रोनेवाला मन अब बडे तूफाान को भी किसी खूबी से झेला जाता है । मेहरून्निसा परवेज का विवाह पन्द्रह वर्श की आयु में अपने से पन्द्रह–बीस बडे उम्रवाले रउफ परवेज के साथ हुआ था, जिनके साथ उनका दॉपत्य जीवन निराषा जनक था । ससुराल वाले कट्टर मुसलमान परिवार होने के कारण उन्हें धार्मिक अंधविष्वासों मे जकडना चाहते थे । विवाह पष्चात दस साल तक बांझपन की विभीशण समस्या को भोगना पडा । बाद एक पुत्र भी पैदा हुआ । पर पति से अलग होना ही पडा, मातृत्व की पवित्र भावना से भी उसे वंचित होना पडा ।

परवेज ने फिर सन् 1979 में आई.ए.एस.अफसर डा.भगीरथ प्रसाद मिश्र से दूसरा विवाह किया । वे भी तलाक षुदा थे । अंतर्जातीय विवाह की सारी समस्याओं को उन्हें वहॉ झेलना पडा । आप सभी धर्मों पर आस्था रखती है । स्त्री को उन्होंने दुर्गा, लक्ष्मी का रूप दिया है । वे हिन्दू देवी देवताओं का नमन भी करती है । परवेज सौम्यषील, परोपकारी एवं अपनत्व से व्यवहार करनेवाली नारी है । उसे दूसरों को खिलाने में बडा आनंद आता है । और वह प्रकृति प्रेमी होने के कारण उनकी रचनाओं में प्रकृति के माध्यम से परिवर्तन लाने की सजगता अधिक दिखाई पडती है । स्वतंत्रयोत्तर युग की महिला लेखिकाओं ने नारी जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन करने का सफल प्रयास किया है । ये लेखिकाएँ स्त्री जीवन की सच्चाई तक पहुँचती हैं और उसकी पीडा से साक्षात्कार करते हुए भोगे हयु यथार्थ और उससे उपजी व्यथा से मुक्ति का प्रभावी प्रयत्न करती है । मेहरून्निसा परवेज ने भी विविधोन्मुखी आधुनिक नारी जीवन के यथार्थ को अपने कथा साहित्य में प्रभावी ढंग से रूपायित किया है ।

भारतीय समाज में सबसे अधिक पीडित, प्रताडित एवं बन्धन ग्रस्त जीव नारी है । 'हमारी समाज में नारी अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहती है । समाज में एक ओर पुरूशों को स्वच्छन्द जीवन भोगने के लिए अनेक सामाजिक सुविधाएँ उपलब्ध रही हैं, दूसरी तरफ नारी घर की चहार दीवारों में बन्द होकर पुरूशों के हाथ की कठपुतली बनी रही है । पुरूश केन्द्रित समाज तथा परिवार में नारी को हीन समझकर उसे समानाधिकारों से वंचित रखा गया । फलतः वह हीन भावना ग्रस्त होकर

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

आजीवन सामाजिक अत्याचार मौन रूप से सहती रहती है । आज षोशित या पीडित नारियॉ सर्वत्र उपलब्ध है । पुरूश की नजर में स्त्री मात्र एक षरीर है, वासना पूर्ति का एक साधन है । मुक्त बाजार में ही स्त्री का षोशण हो रहा है । स्त्री पर बचपन से ही अनेक प्रतिबन्ध लाद दिये गये हैं । विवाह पष्चात पति से भी उस पर बंधन होता है । **' वह निरपराद ही निष्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ऐसा कोई भी नारी जीवित नहीं होगी, जिसने अपने पीडा की मुक्ति के लिए कम से कम एक बार आत्महत्या के बारे में सोचा न होगा।'** कहने का आषय है कि नारी सदा षोशण की चक्र में पिसती रही है, महिला लेखिका परवेज ने अपने कथा साहित्य में ऐसी ही षोशित व पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया है ।

आपकी पहली कहानी जंगली हिरनी धर्मयुग पत्रिका सन् 1963 अक्तूबर में प्रकाषित हुई । तब से श्रीमती परवेज निरन्तर कहानियॉ एवं उपन्यास लिखती रही हैं । आपके प्रमुख कहानी संग्रह हैं :आपके पहली कहानी संग्रह 'आदम और हव्वा' सन् 1972 में प्रकाषित हुआ । इसमें कुल उन्नीस कहानियॉ हैं । दूसरी 'टहनियों पर धूप' सन् 1977 में प्रकाषित हुआ । इसमें कुल बारह कहानियॉ है । 'गलत पुरूश' – यह तीसरा कहानी संग्रह है। इसमें कुल सोलह कहानियॉ हैं । 'फालगुनी' संग्रह सन् 1978 में प्रकाषित हुआ था । इसमें कुल सात कहानियॉ हैं । 'अंतिम चढाई' –यह सन् 1982 में प्रकाषित हुआ था । इसमें कुल सात कहानियॉ हैं । 'एक और सैलाब' सन् 1990 में प्रकाषित हुआ । इसमें कुल बारह कहानियॉ हैं । सोने का बेसर सन् 1991 में प्रकाषित हुआ था । इसमें कुल 11 ग्यारह कहानियॉ है । अयोध्या से वापसी सन् 1991 में प्रकाषित हुआ है । इसमें पंद्रह कहानियॉ है । 'रिष्ते' सन् 1992 में प्रकाषित हुआ है । इसमें इक्कीस कहानियॉ हैं । 'ढहता कुतुबमीनार' सन् 1993 में प्रकाषित हुआ था । इसमें तेरह कहानियॉ हैं । 'अम्मा' सन् 1997 में प्रकाषित हुआ था । इसमें नौ कहानियॉ है । 'समर' सन् 1999 में प्रकाषित हुआ था । इसमें छः कहानियॉ है ।आपके प्रमुख उपन्यास है – 1.ऑखों की दहलीज 2.उसका घर 3.कोरजा 4. अकेला पलष 5.समरांगण 6. प्रासंग । रमजान की ईद, कुत्तों का ट्रैनिंग कालेज, मासूम ऑखों के सवाल, आर्थिक–सामाजिक, नैतिक घुटन, बस्तर मंडई, बॉछडा – रोषनी की पहली दस्तक, नागफनी का नन्दन कानन आदि आपके लेख और संस्मरण है । श्रीमती मेहरून्निसा परवेज पिछले चार दषकों से साहित्य सेवा में कार्यरत है । विभिन्न पत्रिकाओं में आपकी कहानियॉ प्रकाषित हुए हैं उनमें कोई नहीं, बडे लोग, जूठन और लाल गुलाब आदि ।

परवेज की कहानियों में चित्रित नारी व्यथा

मेहरून्निसा परवेज बचपन से ही लेखन कार्य में सक्रिय रही है । उनकी साहित्यिक यात्रा बस्तर से ही षुरू हुई थी । मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्याऍ, षोशित एवं पीडित नारी की दुर्दषा, आर्थिक सामाजिक समस्याऍ, प्रेम के बदलते दृश्टिकोण आदि उनके कथा साहित्य के विशय रहे हैं । उनकी कहानियॉ जीवन की कटु सच्चाइयों से जूझती हुई भयावह से साक्षात्कार कराती है ।

श्रीमती मेहरून्निसा परवेज की कहानियॉ नारी पात्र प्रधान है । उसने विवाह के संबंध में अनेक बदलते दृश्टिकोणों को अपने कहानियों में स्पश्ट किया है । विवाह पूर्व और विवाह के बाद नारी जिस प्रकार समस्याओं को सामना करती हैं, उन समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रण किया हैं । व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतन्त्रतता, सामाजिक षोशण, दहेज प्रथा, परदा प्रथा, वेष्यावृत्ति, बाल–विवाह, बांझपन का बोझ, अनमेल विवाह विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक षोशण, लैंगिक षोशण, अनब्याही नारी की समस्या, प्रेमी द्वारा छली जाना, काम–काजी युवती का विवाह न होना आदि कुछ ऐसी समस्यायें है जिनका सामना पूरी दुनिया की स्त्रीयों को करना पड रहा हैं । ऐसी ही समस्याओं को लेकर परवेज ने अपनी कहानियों को लिखी । जमाना बदल गया, भोगे हुए दिन और अपनी जमीन कहानियों में समाज में बेटे को जितना प्रधानता दिया जाता है और बेटियों को जितनी हीन दृश्टि से देखते हैं – इस समस्या को वर्णन किया है । आज समाज में बेटी को बोझ समझी जा रही है– इस समस्या को 'सूकी बयडी' कहानी में वर्णन किया है । लडकी का विवाह देर होने से लडकी और उसके मॉ–बाप को सगे संबंधियों से ताने सुनने पडते है । 'जाने कब' कहानी इस समस्या संकेत है । अगर लडकियॉ सुन्दर और गुणी हो तो गरीब होते हुए भी कही न कही रिष्ता हो ही जाता है । अगर ऐसा न हुआ तो लडका ढूँढना मुष्किल हो जायेगा । इस समस्या को 'बडे लोग' कहानी में वर्णन किया है । दहेज प्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है । लडकी के जन्म से ही मॉ–बाप इस चिंता में डूब रहते हैं । अन्य अनेक समस्याओं की उत्पत्ती भी यही से होती हैं । विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ–बाप कर्ज में डूब रहते हैं । 'सकी बयडी' कहानी इस समस्या पर है । विवाह पष्चात जब लडकी बहु बनकर ससुराल में आती है तब मानों उस घर का सारा काम उसी का इन्तजार में हैं । कदम रखते ही घर की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमार पडने पर भी उसे काम करना पडता है । इस समस्या को 'अपने–अपने लोग' कहानी में वर्णित है । विवाहित महिला ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठीक नहीं माना जाता है । हमारी पुरानी

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुरा छोडना चाहिए वहॉ के कश्टों और दुखों को सहना उसका नसीब माना जाता है । इसी समस्या को 'अम्मा' कहानी में विष्लेशण है । हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिषाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मौं का दर्जा हासिल कर लेती है । बच्चों से ही उसे समाज और परिवार में प्रतिश्टा हासिल होती है । इसी समस्या को कहानी में वर्णन किया है । दहेज न दे सकने के कारण माता–पिता बेटी को किसी तरह षादी करके हाथ धोना चाहते हैं । उस समय वे उम्र में काफी बडे व्यक्ति से उसका विवाह करा देते हैं । इससे दाम्पत्य जीवन संतुश्ट नहीं हो पाता है । 'नंगी ऑखोंवाला रेगिस्तान' कहानी में इस समस्या को वर्णन किया है । हमारे समाज में पति के देहान्त के बाद पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं है । उसका सजना संवारना और षुभ कार्यों में षामिल होना सिर्फ पति के जीवित रहने तक ही सीमित है । 'वीराने' कहानी में इस समस्या को चित्रण किया है । पुरूश की निगाह में औरत सिर्फ वासना को तृप्त करने का साधन है तो ससुराल के अन्य सदस्यों के लिए वह नौकरानी है । 'पत्थर वाली गली' कहानी में इस समस्या का वर्णित है ।

मध्यप्रदेष के रत्लाम से नीमच तक एक सौ पचास किलोमीटर के राज्यमार्ग में बॉछडा जाति के लोग रहते हैं । ये अपने परिवार की लडकियों से वेष्यवृत्ति करवाते हैं । ये लोग मन्दसौर, नीमच रत्लाम, इन्दौर, उज्जैन, राजपुर जिले में रहते हैं । वे मूलतः मन्दसौर जिले के निवासी थे जो पहले ग्वालियर राज्य में रहते थे । यहॉ के पुरूश आलसी और स्वप्न विलासी है । रीति के अनुसार घर की बडी बेटी को धंधे पर बिठाया जाता है लेकिन अब स्वार्थवष घरवाले छोटी उम्र की लडकियों को भी इस व्यापार में लगा देते हैं । इन लडकियों को 'खेलवाडी' कहते हैं, जिसका अर्थ है जिससे खेला जाय' । रीतिरिवाज और देवी के नाम पर अनेक लडकियों को यौन षोशण होता है । जवान होते–होते किसी लैंगिक बीमारी के कारण इनका देहान्त हो जाता है । मेहरून्निासा परवेज ने इन लडकियों की स्थिति को अपने कहानियों में उजागर किया है जिसका विष्लेशण 'ओढना, खेलावडी, जूठन, और जुगुनू इस समस्या को वर्णन किया है ।

परवेज की कहानियों में नारी–संघर्श–चेतना की अभिव्यक्ति

परिवारिक समस्याओं से जूझकर अपना अस्तित्व कायम रखनेवाली नारी चेतना उनकी रचनाओं की सबसे बडी विषेशता है । महेन्द्र रघुवंषी के अनुसार 'मेहरून्निसा परवेज की नारियॉ समय आने पर पति को भी त्याग सकती है । समाज की परंपराओं को तोड सकती हैं । पति और परिवार से विद्रोह करती हैं । क्योंकि अब हमारे समाज में नारियों ने जीवन का असली रूप देख लिया है, अब वह पुरूश पर आश्रित नहीं है । उसने जीने की राह ढूँढ ली है। जो अपना सब कुछ समर्पित कर देती है, उसे ही बेघर कर दिया जाता है, इसलिए वह चाहती है कि, उसका अपना स्वतंत्र घर हो ।

देहरी की खातिर, कोई नहीं, ओढना, उसका घर, जूठन कहानियों में स्त्री का विद्रोह रूप दिखाई पडती है । नारी की उन्नति के लिए षिक्षा महत्वपूर्ण सूचक है । आर्थिक बल और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए यह एक हथियार है । वह पति या पिता के अभाव में घर का संचालन करती है । उसमें आत्मविष्वास पैदा होता है । 'अम्मा', 'ढहता कुतुब मीनार' इसी आदर्ष को वर्णन किया है ।

आषय यह है कि आज स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व है इसलिए वह पुरूश सत्ता को नकारती है, फिर भी षोशण की परम्परा कायम रही है । नारीगत समस्याओं और षोशण के लिए उत्तरदायी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ही है. जिसका विस्तृत विवेचन मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में उपलब्ध है ।

उपसंहारः

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में नारी जीवन में आये अनेक मोडों को, जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अपनी कहानियों में उन्होंने निम्न वर्ग, मध्यवर्ग के नारी पात्रों का चयन किया है । नारी के षोशण, बदलते परिवेष के साथ उसकी नयी समस्याओं, उसके विभिन्न परंपरागत रूप :: बहन, प्रेमिका, पत्नी और मॉ :: , नयी पीढी की बदलती हुई आकांक्षाओं के अनुरूप नारी का संघर्शात्मक एवं विद्रोही स्वरूप, उसके आक्रोष और अधिकारों के प्रति सजगता को उन्होंने वाणी दी है ।

नारी के व्यक्तित्व, अस्तित्व, उसके स्वतंत्र, विचार, उसकी पीडा आदि को मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में प्रतिबिंबित किया है । स्त्रीयों की व्यक्तिगत, परिवेषगत, मानसिक एवं षारीरिक समस्याओं को उन्होंने व्यापक अभिव्यक्ति दी है । ऐसी नारी पात्रों का वर्णन है जो परंपरागत होते हुए भी परम्परागत नहीं है । आधुनिकता और परंपरा के बीच आज नारी जूझ रही है और मेहरून्निसा परवेज के नारी पात्र इन सबसे बाहर निकलने की राह ढूँढ रही है ।

,,,,,,,,,,,,,,,

www.vimalvimarsh.com

ISSN : 2348 - 5884

विमल - विमर्श

वार्षिक शोध–पत्रिका

A Multi-disciplinary Refereed Research Journal

Vol. 1 (Special Edition)

Year : 6, 2018

INTERNATIONAL CONFERENCE

Executive Editor

Dr. P.K. Jayalakshmi

Editor

Vinay Kumar Shukla *'Vidrohi'*

St. Joseph's College for Women (A)

Reaccredited by NAAC with A Grade

Visakhapatnam - 530 004 (A.P.), Ph. : 0891-2558346

e-mail : sjcwvizag@gmail.com, web : www.stjosephsvizag.com

www.vimalvimarsh.com ISSN :2348-5884

Vimal Vimarsh

International

Peer Reviewed Research Journal

Vol. 1 (Special Edition) **Year : 6, 2018**

A Multi-disciplinary Refereed Research Journal

Chief Editor

Dr. Vibha Shukla

Executive Editor

Dr. P.K. Jayalakshmi

Associate Professor, HOD-Hindi,
St. Joseph's College for Women (A), Visakhapatnam

Editor

Dr. Vinay Kumar Shukla 'Vidrohi'

Asst. Professor, Dept. of Hindi & Other Indian Languages
Jammu Central University, Samba, J & K

St. Joseph's College for Women (A)

(Reaccredited by NAAC with A Grade)
Visakhapatnam - 530 004

33.	रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में नारी की समस्याएँ	डॉ.टी.साई शंकर
34.	'कितना बड़ा झूठ' कहानी -संग्रह में चित्रित कामकाजी नारी की समस्याएँ	डॉ. संदीप श्री राम पाईकराव
35.	स्त्री-लेखन का रचनात्मक दृष्टिकोण और वैचारिक आधार	रामिशेट्टि भास्कर राव
36.	महिला कहानीकार की कहानियों में चित्रित नारी	एस. सूर्यावती
37.	मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में स्त्रियों का शोषण और नारी-मुक्ति संघर्ष	पी. सोमशेखर
38.	महिलाएँ विवेक से काम लें	वी. सुगुणा कुमारी
39.	डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ	वाई. वेंकट लक्ष्मी
40.	हिन्दी साहित्य में चेतना युक्त नारी	डॉ. अरुणा हेमेरत
41.	स्वातंत्र्योतर हिन्दी कथा साहित्य में नारी	आर. उदय भास्कर राव
42.	मोहन राकेश के नाटकों में समाज दर्शन एवं नारी	डॉ. पी. हरिराम प्रसाद
43.	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्रियों का शोषण और नारी मुक्ति संघर्ष	डॉ. श्रीमती के चंद्रा
44.	स्त्री-विमर्श की अवधारणा : सैद्धांतिक पक्ष	मद्दाला जयलक्ष्मी
45.	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में दलित नारी	प्रकाशराव काकानी
46.	महिला सशिक्तकरण : एक विवेचन	के एन एल वी कृष्णवेणी
47.	आधुनिक शहरी नारी की समस्याएं	ई. राजकुमार
48.	स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी साहित्य में नारी	बी. अरुंधती
49.	अंतिम दशक की कहानियों में कामकाजी नारी की समस्याएँ	डॉ. टी. सुनिता
50.	सामाजिक रूढ़ियों के प्रति महिला आत्मकथाकारों का आक्रोश	के सुवर्णा
51.	उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी की विविध समस्याएँ	डॉ. के अनिता
52.	हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में कामकाजी नारी का मानसिक द्वंद्व	डॉ. दीप्ति, डॉ. पी.के.जयलक्ष्मी
53.	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण नारी - जीवन	डॉ. के सुमित्रा
54.	हिन्दी साहित्य में स्त्रियों का शोषण	डॉ. के श्याम सुन्दर
55.	बंजारा इतिहास में नारी	बी. रवीन्द्र नायक
56.	तेलुगु की प्रसिद्ध लेखिका वासिरेड्डी सीतादेवी की कहानियों में नारी	डॉ. पी.के जयलक्ष्मी
57.	स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी साहित्य में नारी	डॉ. अनंत लक्ष्मी
58.	समकालीन हिन्दी तेलुगु कविता में स्त्रीवादी प्रवृत्तियाँ	डॉ. वेन्ना वल्लभराव
59.	हेमंत कुकरेती की कविताओं में चित्रित नारी चेतना	एच. शैला भवानी
60.	स्त्री-विमर्श का अर्थ	डॉ. वेल्पुला मोहनराव
61.	हिन्दी साहित्य में ग्रामीण नारी की समस्याएँ	टी. सुमती
62.	मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी	जे. कृष्णवेणी
63.	चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी पात्र	डॉ. सीएच.वी. महालक्ष्मी
64.	शिवानी जी के उपन्यासों में नारी - पात्रः एक विवेचन	डॉ. एम.आर.वी कुमार्जी
65.	झारखण्ड की आदिवासी महिला रचनाकार	अमित कुमार
66.	नागार्जुन के उपन्यासों में नारी-संघर्ष की दास्तान	वी. सुबन

 ISSN : 2348-5884

मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी

जे.कृष्णवेणी, शोध विद्यार्थिनी,हिन्दी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुन्टूर
डॉ.काकानि श्री कृष्णा, सहायक आचार्य,हिन्दी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुन्टूर

साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य समाज के परिवर्तन के अनुसार तटस्थ एवं निर्वैक्तिक दृष्टि से समाज की ज्वलन्त समस्याओं एवं मनुष्य की विकृतियों, विशेषताओं को स्पष्ट करने एवं समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करता है । इस प्रयास में कथासाहित्य ने समय और संदर्भ के अनुसार अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । स्वतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्यिक लोक में कथा साहित्य का विशेष स्थान है । कथाकार घटनाओं और पात्रों के माध्यम से समाज के ज्वलन्त समस्याओं को अभिव्यक्त करता है ।

भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में नारी शिक्षित और आत्मनिर्भर होकर पुरूष के साथ आगे बढने लगी । परिणाम स्वरूप साहित्य के क्षेत्र में भी महिला कथाकारों की आगमन हुई । इन लेखिकाओं अपने अनुभवों को लेकर कथा साहित्य लिखने लगी । साठोत्तर लेखिकाओं में श्रीमती मेहरून्निसा परवेज का नाम उल्लेखनीय है । उपन्यास, कहानियाँ, लेख एवं संस्मरण लिखने में मेहरून्निसा परवेज सिद्दहस्त है । मुख्य रूप से उन्होंने भोगे हुए यथार्थ का चित्रण अपने साहित्य में वर्णन किया है । उन्होंने नारी की व्यथा-कथा को अनेक दृष्टियों से देखा, इसलिए नारी को अपने कथा साहित्य में प्रमुखता दी है । नारी समस्या, सामाजिक संस्कारों में नारी, नारी का विद्रोही स्वरूप और नारी के बदलते स्वरूप को परवेज अपने कथासाहित्य में प्रस्तुत किया है । जैसे दहेज प्रथा, पर्दाप्रथा, विवाहित एवं अविवाहित जीवन की समस्यायें, बांझापन के कारण मानसिक द्वन्द्व, विधवा एवं परित्यक्त नारी का संघर्ष, यौन शोषण आदि अनेक समस्याओं को अपने कथासाहित्य में वर्णन किया है । उन्होंने नारी उत्थान को अपने साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यों में प्रमुखता दी है ।

स्त्री पर हो रहे अन्याय और अत्याचार पहले घर से शुरू होता है । बचपन से लेकर यौवन स्थिति तक घर में उस पर प्रतिबंध लाद दिये जाते हैं । विवाह के पश्चात् उस पर पति का, बुढापे में पुत्र का वर्चस्व अधिक देखा जाता है । याने जन्म से लेकर मृत्यु तक उस पर कोई-न-कोई प्रतिबंध चलाते रहते हैं । उसे मनुष्य न समझकर सिर्फ खिलौना समझा जाने लगा है । कम से कम उसे हॅसने का भी स्वतंत्रता नहीं रहता है । उसे अनेक यातनाओं को सामना करना पडता है । हर दिन जिन्दगी और मौत के बीच जूझने के लिए मजबूर किया जाता है ।

"यह निरापद ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ऐसी कोई भी नारी जीवित नहीं होगी जिसने अपने पीडा की मुक्ति के लिए कम से कम एक बार आत्महत्या के बारे में सोचा न होगा "। व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतन्त्रता, राजनैतिक अवगणना, सामाजिक शोषण, दहेजप्रथा, परदा प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल-विवाह, विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक यातना, पाशविकता, बलात्कार, परपीडन-कामुक पति द्वारा अत्याचार आदि कुछ ऐसे समस्यायें हैं जिसका सामना पूरी दुनिया की स्त्रियों को करना पड रहा है । ऐसे समस्याओं को मेहरून्निसा परवेज ने अपना कथासाहित्य के द्वारा लोगों के सामने रखा है ।

आज भी भारतीय समाज के लोग जितनी खुशी बेटे का जन्म पर होते हैं उतना बेटी के जन्म पर नहीं । घर में जो अधिकार बेटों को मिलता है वो बेटियों को नहीं । क्योंकि वह बुढापे में माता-पिताओं को सहारा देगा, वंश को आगे बढ़ायेगा, परिवार का नाम रोशन करेगा । परवेज जी "जमाना बदल गया है" कहानी में इस आयाम को प्रकट की है । कहानी में बहने अपने भाई के किस्मत को इस प्रकार सराहती है— "देखो लडका होने का फाइदा——बिटियन की तो [illegible] नहीं, कोई पूछता नहीं, जैसे घूरे पर से उठाकर ले आए हो' ।-1

लडकियों को शिक्षा से दूर रखा जाता है क्योंकि घर का काम सीख लेने से उसका भविष्य संवर जायेगा। अगर लडकी पढे तो उसको वर ढूँढना मुश्किल और उससे ज्यादा पढनेवाले वर को ढूँढना पडता है। "मोगे ... कहानी में सात साल की सोफिया घर पर बैठी लकडियाँ बेचती है। घर के दूसरे काम करती है और घर पर ही ... उसे पढाती है। लेकिन उसका भाई जावेद स्कूल जाकर पढता है।

बेटियों को इस समाज में जन्म से लेकर मरण तक लानते सहनी पडती है। उसको जन्म देनेवाली माँ को ... प्रवत्ति का हिस्सेदार बनना पडता है। " अपनी जमीन" कहानी में गोदावरी ने चार बेटियों को जन्म दिया, सास का ... सुनना उसका दिनचर्या बन चुका था। पॉचवी बार बेटे को जन्म उसने राहत की सॉ ली, सास के लिए वह उसके ... धन सनाप्त करके, खून चूसने वाली कुलच्छनी" थी।

गरीब माता-पिताओं को बेटी बोझ के समान है। वे अपने बोझ को हल्का करने के लिए बेटी के इच्छाओं ... सपनों को गला घोंट देती है। बेटी की भविष्य की चिन्ता किये बिना अपना काम पूरा करके गंगा नहा लेते हैं। ... बयाडी" कहानी में होरा को अपनी बडी बहन के लिए अपने प्यार की बली चढानी पडती है। वह अपने सारे दुखों को ... अन्दर दफना देती है। मॉ-बाप के लिए लडकी का शादी एक विकट समस्या बनती जा रही है। "कोरजा" उपन्यास ... नानी भी इस बात से चिंतित हैं कि जहॉ मुसलमानों में चार-चार विवाह करने की छूट है वही आज वे एक ही विवाह कर ... संतुष्ट हो जाते हैं क्योंकि एक औरत का ही खर्चा-पानी निकालना मुश्किल हो गया है। नानी के अनुसार इसलिए लडकियाँ ... ढलती जवानी तक अपने घर बैठी रहती है।

लडकी का विवाह देर से होने पर, लडकी और उसके मॉ-बाप, दोनों को अन्य लोगों से ताने सुनने पडते हैं जिससे ... उन्हें मानसिक-संघर्ष के दौर से गुजरना पडता है। "जाने कब" कहानी में शन्नो और उसके परिवार वालों की स्थिति कुछ ... इसी प्रकार की हैं। दहेजप्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है। लडका के जन्म से ही मॉ-बाप ... इस चिंता में डूबे रहते हैं। विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ-बाप कर्ज में डूबे रहते हैं। " सूकी बयाडी" कहानी ... नीमडा, पत्नी और बेटा टेसुआ लडकियों के शादी के लिए मजदूरी करके दहेज इकठठा करते हैं।

गरीब या मध्यवर्ग के लडकियों को वर का चयन करने का अधिकार बहुत कम मिलता है। जहॉ जिसके साथ ... विवाह घरवालों द्वारा तय किया जाता है। लडकियॉ हामी भरने को मजबूर हो जाती है। "कोरजा" उपन्यास में रब्बो ... ने भी अपनी तकदीर समझकर इस बात को स्वीकार कर लिया है। लडकियॉ घरवालों के लिए कभी-कभी अपने प्यार का ... त्याग करना पडता है। "ऑखों की दहलीज" उपन्यास में जमीला, जमशेद से प्यार करती है, पर घरवालों को उसके ... की जरूरत है वह अपने प्यार की कुरबानी देने को तैयार होती है।

विवाह होकर दूसरे परिवार में लडकी जब जाती है तब उसे वहॉ अपने आपको व्यवस्थित करने में वक्त लगता है ... क्योंकि मायके से अलग वातावरण उसे पति के घर में मिलता है। " अकेला पलश" उपन्यास में तहमीना को इस बात का ... अनुभव होता है। वह कहती है-

"औरत की जिन्दगी उस पौधे की तरह है जिसे एक जगह से उखाडकर नई जगह लगाया जाता है। नई जमीन में ... अपनी जडे जमाने में उसे उतना ही समय लगेगा न, यदि उसी प्रकार की वातावरण पानी और पर्याप्त खाद नहीं मिला तो हो ... सकता है वह नयी जगह लग ही न पाये और सूख जायेगा।"-2

विवाह के बाद नारी से यह उम्मीद की जाती है कि वह अपनी यादों, स्वप्नों और खुशियों को छोडकर सिर्फ अपने पति और उसके घरवालों के लिए जीवन बिताये । पत्नी को पति की इच्छा के अनुसार अपने आपको बदलना पडता है । उसका पूरा व्यक्तित्व नाश हो जाता है । जब लडकी बहु बनकर ससुराल पहुँचती है तब मानो उस घर का सारा काम उसके इन्तजार में है। कदम रखते ही घर की नौकरानी बन जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमारी के दौरान भी घर का सारा काम उसी को करना पडता है । "अपने–अपने लोग" कहानी में 'सुमन' गृहस्थी और नौकरी के बीच दिन–रात पिसती रहती है । उसकी सहायता करनेवाला कोई नहीं रहता ।

अगर विवाह के बाद नारी को पति से कोई खुशी और प्यार नहीं मिलता है तो भी वह उस घर को सवारती है । पति की हर खुशी का ख्याल रखती है । "अपने होने का एहसास" कहानी में पति द्वारा पत्नी को कभी भी खुशी का एक पल भी नसीब नहीं होता है । पूरे दिन उसके तरफ देखता नहीं । रात में नशराब की नशा कम करने के लिए उसके पास आता है । फिर भी वह उस घर का हमेशा की तरह सॅवारती रहती है ।

विवाह पूर्व जो स्त्री बौद्धिक स्तर पर आगे थी । जिन्दगी की हर चुनौती को स्वीकार करने को तत्पर रहती थी । वही विवाह पश्चात सिमटकर घर की चार दीवार में अपने आपको कैद कर लेती है । ऐसा न करने पर पति और पत्नी के बीच टकराव होने की गुंजाइश रहती है । इससे दांपत्य जीवन में दरारे पैदा हो सकती है । " जीवन मंथन" कहानी में नीता विवाह पूर्व कालेज की हर गतिविधियों में शामिल होती थी और इसी गुण के कारण अमित ने उससे विवाह किया था । लेकिन विवाह पश्चात उसकी दुनिया घर के अन्दर सीमित हो जाती है । अपना सार्वजनिक जीवन को त्याग करती है ।

निम्न मध्यवर्ग के लोग किसी प्रकार दहेज देकर बेटी का विवाह करते हैं । विवाह पश्चात् बेटी के दुखों को, अपना समझकर माता–पिता आश्वस्त हो जाते हैं । लडकी भी यही समझकर सब कुछ झेल लेती है । "सूकी बयाडी" कहानी में थोरा और होरा को भी माता–पिता अनेक कष्ट झेलकर बेटियों को शादी करते हैं । पर थोरा का जीवन अच्छा नहीं रहता । थोरा के पति का दृष्टि जब होरा पर पडती है । तब थोरा और होरा बहुत दुखित होते हैं । यह सब अपना नसीब समझकर छुप हो जाती हैं ।

भारतीय समाज में बेटी ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठीक नहीं माना जाता । हमारी पुरानी रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुराल छोडना चाहिए । मायका तो पराया हो ही जाता है । "अम्मा" कहानी में सुमन और उमा, मॉ की इसी नजरिए के कारण ससुराल में उम्र कैद रहने को मजबूर हो जाती है । "आकृतियॉ और दीवारे" कहानी की मुख्य नारी पात्र तलाक – पश्चात मायके वापस आती है । आत्मनिर्भर होने पर भी उसे उपेक्षा भरी नजरों का सामना करना पडता है । अयोध्या से वापसी कहानी में नीरा जब पति को छोडकर मायके आती है । तब उसे मायके में अनेक चीत्कारों को सुनना पडता है । विवाह के पहले तक पिता कहते – मेरी लडकी पति के पैर की जूती बनकर नहीं रह सकती । पर जब नीरा पति को छोडकर मायके आती उसे पिता समझा बुझाकर वापस पति के पास छोड देता है । लोगों का चीत्कार वह सुन नहीं पाता ।

हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिशाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मॉ का दर्जा हासिल कर देती है । बच्चों से ही उसे समाज और परिवार में प्रतिष्ठा हासिल होती है । "सूकी बयाडी" कहानी में थोरा मॉ नहीं बन पाती है । और इस कारण उसे पति के अत्याचारों को सहना पडता है । घर में सौतन मोहिनी को लाकर पति उसका अपमान करता है । फिर भी वह चुप रहती है क्योंकि वह इसे अपना ही दोष मानती है ।

 ISSN : 2348-5884

जिस घर में बेटी को बोझ समझा जाता है, वहाँ लडकी का विवाह माता–पिता किसी प्रकार निपटा [illegible] इस उधेडबुन मे वे कभी–कभी उम्र मे काफी बडे व्यकित से उसका विवाह करा देते है । 'नंगी आँखों वाला [illegible]' मे 'नीरा' का पति उससे दुगुनी उम्र का है । अधेड पति से नीरा को पिता जैसा स्नेह मिलता है । नीरा [illegible] सुलगती रहती है । उसकी जरूरतों को पति समझ नहीं पाता है । 'अकेला पलश' उपन्यास में पन्द्रह [illegible] पिता के दोस्त जमशेद से व्याह कर दिया जाता है । अनमेल विवाह के कारण वह एक ओर मानसिक [illegible] है । दूसरी ओर शारीरक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण जिन्दगी भर तडपती रहती है ।

नारी के लिए विधवा जीवन बहुत दुखित है । 'जीवन मंथन' कहानी में 'अमित' के देहान्त के बाद [illegible] एक–एक करके सब कुछ छिन जाता है । सारे सुखों से उसे वंचित कर दिया जाता है । शुभ कार्यों [illegible] श्रृंगार करना उसके लिए वर्णित हो जाता है । उसे अपशकुन माना जाता है ।''बौना मौन'' कहानी में नीतू के [illegible] के बाद वह बेसारा हो जाती है । पति की पेंशन पाने के लिए उसे दफ्तरों के चक्कर लगाने पडते है और [illegible] लिए उसे साहब को संतुष्ट करना पडता है । अगर नारी आत्मनिर्भरता से पति से तलाक लेती है तो मायके [illegible] लोगों से अपमान, उपेंक्षा या असुक्षा का भाव सामना करना पडता है । 'ढहता कुतुबमीनार' ''साल की [illegible] आकृतियॉ और दीवारें'' कहानियों के नारी पात्राएँ तलाक के पश्चात अपने मायके में रहती है । आत्मनिर्भर [illegible] घरवालों से उन्हें उपेक्षा मिलती है ।

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में, नारी जीवन में आये अनेक मोडों को, जीवन के यथार्थ [illegible] जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अपने कथा–साहित्य में उन्होंने निम्नवर्ग, मध्यवर्ग के नारी पात्रों [illegible] है । नारी के शोषण, बदलते परिवेश के साथ उसकी नयी समस्याओं, नयी पीढी की बदलती हुई आकांक्षाओं [illegible] का संघर्षात्मक एवं विद्रोही स्वरूप, उसके आक्रोश और अधिकारों के प्रति सजगता को उन्होंने वाणी दी है [illegible] व्यक्तित्व, अस्तित्व, उसके स्वतंत्र विचार, उसकी पीडा आदि को मेहरून्निसा परवेज ने अपने कथा–साहित्य में [illegible] है । स्त्रियों के व्यक्तिगत, परिवेशगत, मानसिक एवं शारीरक समस्याओं को उन्होंने व्यापक अभिव्यक्ति दी है [illegible] पात्रों का वर्णन हैं जो परंपरागत होते हुये भी परम्परागत नहीं है। । आधुनिकता और परंपरा के बीच आज नारी [illegible] और मेहरून्निसा परवेज के नारी पात्र इन सबसे बाहर निकलने की राह ढूँढ रही है ।

संदर्भ ग्रन्थः

1. जमाना बदल गया है (सोने का बेसर). पृष्ठ.139
2. अकेला पलश पृष्ठ.49
3. मेहरून्निसा परवेज की लोकप्रिय कहानियॉ–प्रभात प्रकाशन

मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी

जे.कृष्णवेणी, शोध विद्यार्थिनी,हिन्दी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुन्टूर
डॉ.काकानि श्री कृष्णा, सहायक आचार्य,हिन्दी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुन्टूर

साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य समाज के परिवर्तन के अनुसार तटस्थ एवं निर्वैक्तिक दृष्टि से समाज की ज्वलन्त समस्याओं एवं मनुष्य की विकृतियों, विशेषताओं को स्पष्ट करने एवं समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करता है । इस प्रयास में कथासाहित्य ने समय और संदर्भ के अनुसार अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । स्वतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्यिक लोक में कथा साहित्य का विशेष स्थान है । कथाकार घटनाओं और पात्रों के माध्यम से समाज के ज्वलन्त समस्याओं को अभिव्यक्त करता है ।

भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में नारी शिक्षित और आत्मनिर्भर होकर पुरूष के साथ आगे बढने लगी । परिणाम स्वरूप

साहित्य के क्षेत्र में भी महिला कथाकारों की आगमन हुई । इन लेखिकाओं अपने अनुभवों को लेकर कथा साहित्य लिखने लगी । साठोत्तर लेखिकाओं में श्रीमती मेहरून्निसा परवेज का नाम उल्लेखनीय है । उपन्यास, कहानियॉ, लेख एवं संस्मरण लिखने में मेहरून्निसा परवेज सिद्वहस्त है । मुख्य रूप से उन्होंने भोगे हुए यथार्थ का चित्रण अपने साहित्य में वर्णन किया है । उन्होंने नारी की व्यथा–कथा को अनेक दृष्टियों से देखा, इसलिए नारी को अपने कथा साहित्य में प्रधानता दी है । नारी समस्या, सामाजिक संस्कारों में नारी, नारी का विद्रोही स्वरूप और नारी के बदलते स्वरूप को परवेज अपने कथासाहित्य में प्रस्तुत किया है । जैसे दहेज प्रथा, पर्दाप्रथा, विवाहित एवं अविवाहित जीवन की समस्यायें, बांझापन के कारण मानसिक द्वन्द्व, विधवा एवं परित्यक्त नारी का संघर्ष, यौन शोषण आदि अनेक समस्याओं को अपने कथासाहित्य में वर्णन किया है । उन्होने नारी उत्थान को अपने साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यों में प्रमुखता दी है ।

स्त्री पर हो रहे अन्याय और अत्याचार पहले घर से शुरू होता है । बचपन से लेकर यौवन स्थिति तक घर में उस पर प्रतिबंध लाद दिये जाते हैं । विवाह के पश्चात् उस पर पति का, बुढापे में पुत्र का वर्चस्व अधिक देखा जाता है । याने जन्म से लेकर मृत्यु तक उस पर कोई–न–काई प्रतिबंध चलाते रहते हैं । उसे

मनुष्य न समझकर सिर्फ खिलौना समझाा जाने लगा है । कम से कम उसे हॅसने का भी स्वतंत्रता नहीं रहता है । उसे अनेक यातनाओं को सामना करना पडता है । हर दिन जिन्दगी और मौत के बीच जूझने के लिए मजबूर किया जाता है ।

''यह निरापद ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ऐसी कोई भी नारी जीवित नहों होगी जिसने अपने पीडा की मुक्ति के लिए कम से कम एक बार आत्महत्या के बारे में सोचा न होगा ''। व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतन्त्रता, राजनीतिक अवगणना, सामाजिक शोषण, दहेजप्रथा, परदा प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल–विवाह, विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक शोषण, पाशविकता, बलात्कार, परपीडन–कामुक पति द्वारा अत्याचार आदि कुछ ऐसे समस्यायें हैं जिसका सामना पूरी दुनिया की स्त्रीयों को करना पड रहा है । ऐसे समस्याओं को मेहरून्निसा परवेज ने अपना कथासाहित्य के द्वारा लोगों के सामने रखा है ।

आज भी भारतीय समाज के लोग जितनी खुशी बेटे का जन्म पर होते हैं उतना बेटी के जन्म पर नहीं । घर में जो विशेषाधिकार बेटों को मिलता है वो बेटियों को नहीं । क्योंकि वह बुढापे में माता–पिताओं को सहारा देगा, वंश को आगे बढायेगा, परिवार का नाम रोशन करेगा । परवेज जी ''जमाना बदल गया है'' कहानी में इस आयाम को प्रकट की है । कहानी में बहने अपने भाई के किस्मत को इस प्रकार सराहती है–– ''देखो लडका होने का फाइदा–––बिटियन की तो कोई कद्र नहीं, कोई पूछता नहीं, जैसे घूरे पर से उठाकर ले आए हो'।–1

लडकियों को शिक्षा से दूर रखा जाता है क्योंकि घर का काम सीख लेने से उसका भविष्य संवर जायेगा । और अगर लडकी पढे तो उसको वर ढूॅढना मुश्किल और उससे ज्यादा पढनेवाले वर को ढूॅढना पडता है । ''भोगे हुए दिन'' कहानी में सात साल की सोफिया घर पर बैठी लकडियॉ बेचती है । घर के दूसरे काम करती है और घर पर ही उसकी मॉ उसे पढाती है। लेकिन उसका भाई जावेद स्कूल जाकर पढता है ।

बेटियों को इस समाज में जन्म से लेकर मरण तक लानते सहनी पडती है । उसको जन्म देनेवाली मॉ को भी इस प्रवत्ति का हिस्सेदार बनना पडता है । '' अपनी जमीन'' कहानी में गोदावरी ने चार बेटियों को जन्म दिया, सास का ताना सुनना उसका दिनचर्या बन चुका था । पॉचवी बार बेटे को जन्म उसने राहत की सॉ ली, सास के लिए वह उसके बेटे का धन समाप्त करके, खून चूसने वाली कुलच्छनी'' थी ।

गरीब माता–पिताओं को बेटी बोझ के समान है । वे अपने बोझ को हल्का करने के लिए बेटी के इच्छाओं और सपनों को गला घोंट देती है । बेटी की भविष्य की चिन्ता किये बिना अपना काम पूरा करके गंगा नहा लेते हैं । ''सूकी बयाडी''कहानी में होरा को अपनी बडी बहन के लिए अपने प्यार की बली चढानी पडती है । वह अपने सारे दुखों को अपने अन्दर दफना देती है । मॉ–बाप के लिए लडकी का शादी एक विकट समस्या बनती जा रही है । ''कोरजा'' उपन्यास में नानी भी इस बात से चिंतित हैं कि जहॉ मुसलमानों में चार–चार विवाह करने की छूट है वही आज वे एक ही विवाह करके संतुष्ट हो जाते हैं क्योंकि एक औरत का ही खर्चा–पानी निकालना मुश्किल हो गया है । नानी के अनुसार इसलिए लडकियॉ ढलती जवानी तक अपने घर बैठी रहती है ।

लडकी का विवाह देर से होने पर, लडकी और उसके मॉ–बाप , दोनों को अन्य लोगों से ताने सुनने पडते हैं जिससे उन्हें मानसिक–संघर्ष के दौर से गुजरना पडता है । ''जाने कब'' कहानी में शन्नो और उसके परिवार वालों की स्थिति कुछ इसी प्रकार की हैं । दहेजप्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है । लडका के जन्म से ही मॉ'–बाप इस चिंता में डूबे रहते हैं । विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ–बाप कर्ज में डूबे रहते हैं । '' सूकी बयाडी'' कहानी में नीमडा, पत्नी और बेटा टेसुआ लडकियों के शादी के लिए मजदूरी करके दहेज इकठठा करते हैं ।

गरीब या मध्यवर्ग के लडकियों को वर का चयन करने का अधिकार बहुत कम मिलता है । जहॉ जिसके साथ, जब विवाह घरवालों द्वारा तय किया जाता है । लडकियॉ हामी भरने को मजबूर हो जाती है । ''कोरजा'' उपन्यास में रब्बो आपा ने भी अपनी तकदीर समझकर इस बात को स्वीकार कर लिया है ।लडकियॉ घरवालों के लिए कभी–कभी अपने प्यार को त्याग करना पडता है । ''ऑखों की दहलीज'' उपन्यास में जमीला, जमशेद से प्यार करती है, पर घरवालों को उसके सहारे की जरूरत है वह अपने प्यार की कुरबानी देने को तैयार होती है ।

विवाह होकर दूसरे परिवार में लडकी जब जाती है तब उसे वहॉ अपने आपको व्यवस्थित करने में वक्त लगता है क्योंकि मायके से अलग वातावरण उसे पति के घर में मिलता है । '' अकेला पलश'' उपन्यास में तहमीना को इस बात का अनुभव होता है । वह कहती है–

''औरत की जिन्दगी उस पौधे की तरह है जिसे एक जगह से उखाडकर नई जगह लगाया जाता है । नई जमीन में अपनी जडे जमाने मेंं उसे उतना ही समय

लगेगा न, यदि उसी प्रकार की वातावरण पानी और पर्याप्त खाद नहीं मिला तो हो सकता है वह नयी जगह लग ही न पाये और सूख जायेगा।''—2

विवाह के बाद नारी से यह उम्मीद की जाती है कि वह अपनी यादों, स्वप्नों और खुशियों को छोडकर सिर्फ अपने पति और उसके घरवालों के लिए जीवन बिताये । पत्नी को पति की इच्छा के अनुसार अपने आपको बदलना पडता है । इससे उसका पूरा व्यक्तित्व नाश हो जाता है । जब लडकी बहु बनकर ससुराल पहुँचती है तब मानो उस घर का सारा काम उसी के इन्तजार में है। कदम रखते ही घर की नौकरानी बन जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमारी के दौरान भी घर का सारा काम उसी को करना पडता है । ''अपने—अपने लोग ''कहानी में ''सुमन'' गृहस्थी और नौकरी के बीच दिन—रात पिसती रहती है । उसकी सहायता करनेवाला कोई नहीं रहता ।

अगर विवाह के बाद नारी को पति से कोई खुशी और प्यार नहीं मिलता है तो भी वह उस घर को सवारती है । वह पति की हर खुशी का ख्याल रखती है । ''अपने होने का एहसास'' कहानी में पति द्वारा पत्नी को कभी भी खुशी का एक पल भी नसीब नहीं होता है । पूरे दिन उसके तरफ देखता नहीं । रात में नशराब की नशा कम करने के लिए उसके पास जाता है । फिर भी वह उस घर का हमेशा की तरह सँवारती रहती है ।

विवाह पूर्व जो स्त्री बौद्धिक स्तर पर आग थी । जिन्दगी की हर चुनौती को स्वीकार करने को तत्पर रहती थी । वह विवाह पश्चात सिमटकर घर की चार दीवार में अपने आपको कैद कर लेती है । ऐसा न करने पर पति और पत्नी के अहं में ठकराव होने की गुंजाइश रहती है । इससे दांपत्य जीवन में दरारे पैदा हो सकती है । '' जीवन मंथन'' कहानी में नंदिता विवाह पूर्व कालेज की हर गतिविधियों में शामिल होती थी और इसी गुण के कारण अमित ने उससे विवाह किया था । लेकिन विवाह पश्चात उसकी दुनिया घर के अन्दर सीमित हो जाती है । अपना सार्वजनिक जीवन को त्याग करती है ।

निम्न मध्यवर्ग के लोग किसी प्रकार दहेज देकर बेटी का विवाह करते हैं । विवाह पश्चात् बेटी के दुखों को, किस्मत समझकर माता—पिता आश्वस्त हो जाते हैं । लडकी भी यही समझकर सब कुछ झेल लेती है । ''सूकी बयाडी'' कहानी में थोरा और होरा को भी माता—पिता अनेक कष्ट झेलकर बेटियों को शादी करते हैं । पर थोरा का जीवन अच्छा नहीं रहता । थोरा के पति का दृष्टि जब होरा पर पडती है । तब थोरा और होरा बहुत दुखित होते हैं । यह सब अपना किस्मत समझकर छुप हो जाती हैं ।

भारतीय समाज में बेटी ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठोक नहीं माना जाता । हमारी पुरानी रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुराल छोडना चाहिए । मायका तो पराया हो ही जाता है । ''अम्मा'' कहानी में सुमन और उमा, मॉ की इसी नजरिए के कारण ससुराल मं उम्र कैद काटने को मजबूर हो जाती है । ''आकृतियॉ और दीवारे'' कहानी की मुख्य नारी पात्र तलाक – पश्चात मायके वापस आती है । आत्मनिर्भर होने पर भी उसे उपेक्षा भरी नजरों का सामना करना पडता है । अयोध्या से वापसी कहानी में नीरा जब पति को छोडकर मायके आती है । तब उसे मायके में अनेक चीत्कारों को सुनना पडता है । विवाह के पहले तक पिता कहते – मेरी लडकी पति के पैर की जूती बनकर नहीं रह सकती । पर जब नीरा पति को छोडकर मायके आती उसे पिता समझा बुझाकर वापस पति के पास छोड देता है । लोगों का चीत्कार वह सुन नहीं पाता ।

हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिशाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मॉ का दर्जा हासिल कर देती है । बच्चों से ही उसे समाज और परिवार में प्रतिष्ठा हासिल होती है । सूकी बयाडी कहानी में थोरा मॉ नहीं बन पाती है । और इस कारण उसे पति के अत्याचारों को सहना पडता है । घर में सौतन मोहिनी को लाकर पति उसका अपमान करता है । फिर भी वह चुप रहती है क्योंकि वह इसे अपना ही दोष समझती है ।

जिस घर में बेटी को बोझ समझा जाता है, वहॉ लडकी का विवाह माता–पिता किसी प्रकार निपटा देना चाहते है। इस उधेडबुन में वे कभी–कभी उम्र में काफी बडे व्यकित से उसका विवाह करा देते हैं । 'नंगी ऑखों वाला रेगिस्तान' कहानी में 'नीरा' का पति उससे दुगुनी उम्र का है । अधेड पति से नीरा को पिता जैसा स्नेह मिलता है । नीरा अपनी ही आग में सुलगती रहती है । उसकी जरूरतों को पति समझ नहीं पाता है । 'अकेला पलश' उपन्यास में पन्द्रह वर्षीय 'तालिया' को पिता के दोस्त जमशेद से व्याह कर दिया जाता है । अनमेल विवाह के कारण वह एक ओर मानसिक रूप से व्यथित होती है । द्सरी ओर शारीरक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण जिन्दगी भर तडपती रहती है ।

नारी के लिए विधवा जीवन बहुत दुखित है । 'जीवन मंथन' कहानी में 'अमित' के देहान्त के बाद नंदिता से एक–एक करके सब कुछ छिन जाता है । सारे सुखों से उसे वंचित कर दिया जाता है । शुभ कार्यों में भाग लेना और श्रृंगार करना उसके लिए वर्णित हो जाता है । उसे अपशकुन माना जाता है

।''बौना मौन'' कहानो में नीतू के पति के देहान्त के बाद वह बेसारा हो जाती है । पति की पेंशन पाने के लिए उसे दफ्तरों के चक्कर लगाने पडते हैं और अंत में इस के लिए उसे साहब को संतुष्ट करना पडता है । अगर नारी आत्मनिर्भरता से पति से तलाक लेती है तो मायके या बाहर के लोगों स अपमान, उपेंक्षा या असुक्षा का भाव सामना करना पडता है । 'ढहता कुतुबमीनार' ''साल की पहली रात'' और आकृतियॉ और दीवारें'' कहानियों के नारी पात्राएँ तलाक के पश्चात अपने मायके में रहती है । आत्मनिर्भर होने के पश्चात भी घरवालों से उन्हें उपेक्षा मिलती है ।

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में, नारी जीवन में आये अनेक मोडों को, जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अपने कथा–साहित्य मं उन्होंने निम्नवर्ग, मध्यवर्ग के नारी पात्रों का चयन किया है । नारी के शोषण, बदलते परिवेश के साथ उसकी नयी समस्याओं, नयी पीढी की बदलती हुई आकांक्षाओं के अनुरूप नारी का संघर्षात्मक एवं विद्रोही स्वरूप, उसके आक्रोश और अधिकारों के प्रति सजगता को उन्होंने वाणी दी है । नारी के व्यक्तित्व, अस्तित्व, उसके स्वतंत्र विचार, उसकी पीडा आदि को मेहरून्निसा परवेज ने अपने कथा–साहित्य में उद्घाटित किया है । स्त्रियों क व्यक्तिगत, परिवेशगत, मानसिक एवं शारीरक समस्याओं को उन्होंने व्यापक अभिव्यक्ती दी है । ऐसी नारी पात्रों का वर्णन हैं जो परंपरागत होते हुये भी परम्परागत नहीं है। । आधुनिकता और परंपरा के बीच आज नारी जूझ रही है और मेहरून्निसा परवेज के नारी पात्र इन सबसे बाहर निकलने की राह ढूँढ रही है ।

संदर्भ ग्रन्थः

1ण जमाना बदल गया है ;सोने का बेसरद्ध. पृष्ठ.139
2ण अकेला पलश पृष्ठ.49
3ण मेहरून्निसा परवेज की लोकप्रिय कहानियॉ–प्रभात प्रकाशन

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी संवेदना

जे.कृष्णवेणी, शोधविद्यार्थी, नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर, आन्ध्रप्रदेश

स्त्री और पुरूष का संबंध श्रृष्टि में शाश्वत और पाकृतिक है । एक के बिना, दूसरे का स्थान नहीं हैं । श्रृष्टि के प्रारंभ में स्त्री और पुरूष समानाधिकारी थे । पर सभ्यता के विकास के साथ–साथ नारी के प्रति दृष्टिकोण और नारी की स्थिति में बदलाव आया । पुरूष सीता जैसे पत्नी को चाहता पर वह राम जैसा नहीं रहता । वैदिक काल में स्त्री को पुरूष के समकक्ष स्थान दिया गया था । उस काल में स्त्री भोग्या, पूज्या, प्रेयसी, प्रेरणा, सहयोगिनी और सहचारिणी थी । पर मध्यकाल में नारी की प्रतिष्ठा घटती जा रही है । इस काल में स्त्री चार दीवारों में बंदी हो गयी । उस पर धार्मिक शोषण बढ गयी । बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि दुराचार नारी की अस्तित्व पर अपना कब्जा जमा लिया । बाद नवजागरण के फल स्वरूप स्त्री शिक्षा के प्रोत्साहन ने आधुनिक युग में नारी को उँचा दर्जा दिया है । इससे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में वह अपना विशिष्ठ स्थान निभाने के लिए प्रयत्न कर रही है । स्वामी विवेकानंद, राजराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, श्रीमती अनिबिसेंट, महात्मा गॉधी आदि नेताओं ने नारीगत रूढियों और अंधविश्वासों के चक्रव्यूह को तोडने का प्रयास किया है । तबसे नारी वर्ग अपने अधिकार को समझकर अपने अस्तित्व की मॉग करने लगी ।

स्त्रीवादी परंपरा को लेकर अनेक महिला कथासाहित्यकार हिन्दी साहित्य जगत में आयी और अपनी लेखन शक्ति द्वारा स्त्रीयों पर होनेवाले अत्याचार एवं शोषण पर तीखा प्रहार किया है । नारी जीवन के यथार्थ को गहराई तक वर्णन किया है । अपने लेखन में लेखिकाओं ने शोषित स्त्री की पीडा को ही स्वर नहीं दिया उसे विरोध और आकोश भी किये । ये स्त्री जीवन की सच्चाई तक पहुँचती है और उसकी पीडा से साक्षात्कार करते हुए, भोगे हुए यथार्थ और उससे उपजी व्यथा से मुक्ति का प्रभावी प्रयत्न करती है । ये लेखिकाएँ स्वयं अनुभव किये दुख दर्दों को आधार बनाकर उन्होंनें साहित्य लिखे और अपने कथासाहित्य के द्वारा उन परिस्थितियों को बदलना भी चाहा । इनमें कृष्ण सोबती, शशीप्रभा, मन्नूभण्डारी, उषाप्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज, कृष्ण सोबती, निरूपमा सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सूर्यबाला, चित्रामुदगल आदि प्रसिद्ध है । जीवन की हर परिस्थिति से गुजरने के पश्चात, उन परिस्थितियों से अनुभूत क्षणों को स्मृति में सजोकर उन्हें अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त करने में ये लेखिकाएँ बहुत हद तक सफल हुई है ।

मुस्लिम मध्यवर्ग चेतना की कथा लेखिका श्रीमती मेहरून्निसा परवेज इन महिला कथाकारों में अग्रगण्य है । आप भी विविधोन्मुखी आधुनिक नारी जीवन के यथार्थ को अपने कथासाहित्य में प्रभावी ढंग से वर्णन किया है । उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है । भारतीय समाज में सबसे अधिक पीडित, प्रताडित एवं बन्धनग्रस्त जीव नारी है । हमारी समाज में नारी अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहती है । समाज में एक ओर पुरूषों को स्वच्छन्द जीवन भोगने के लिए अनेक सामाजिक सुविधाएँ उपलब्ध रही है । दूसरी ओर नारी घर की चहार दीवारों में बन्द होकर पुरूषों के हाथ की कठपुतली बनी रही है । पुरूष केन्दित समाज तथा परिवार नारी को हीन समझकर उसे समानाधिकारों से वंचित रखा गया है । फलतः वह हीन भावना ग्रस्त होकर आजीवन सामाजिक अत्याचार मौन रूप से सहती रहती है । कहने का आशय है कि नारी सदा शोषण की चक में पिसती रहती है, महिला लेखिका परवेज अपने कथा साहित्य में ऐसी ही शोषित व पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया है ।

मेहरून्निासा परवेज का अनुभव संसार बहुत गहरा है । दर्द की पहचान उन्होंने अपनी जीवन यात्रा से ही पायी थी । अपने बेटे की मृत्यु ने उसे अंधकार में डाल दिया । दूसरों के दर्द को अपने में वे समेट लेती है । क्योंकि उन्होंने अपनी जिन्दगी में काफी दुख दर्द का अनुभव किया था । इसी वेदना में दूसरों की वेदना और भावनाओं को जोडकर कथा साहित्य लिखा लिया । संवेदनात्मक नारी होने के कारण उनका साहित्य भी नारी संवेदना से भर गया है ।

मेहरून्निासा परवेज की कहानियॉ नारी पात्र प्रधान है । उसने विवाह के संबंध में अनेक बदलती दृष्टिकोणों को अपनी कहानियों में स्पष्ट किया है । विवाह पूर्व और विवाह के बाद नारी जिस प्रकार समस्याओं को सामना करती है, उन समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रण किया है । व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतंत्रता, सामाजिक शोषण, दहेज प्रथा, परदा प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल–विवाह, बांझपन का बोझ, अनमेल विवाह विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक शोषण, लैंगिक शोषण, अनब्याही नारी की समस्या, प्रेमी द्वारा छली जाना, काम–काजी युवती का विवाह न होना आदि कुछ ऐसी समस्यायें है ं जिनका सामना पूरी दुनिया की स्त्रीयों को करना पड रहा हैं। ऐसी ही समस्याओं को लेकर परवेज ने अपनी कहानियों को लिखी ।

'जमाना बदल गया' भोगे हुए दिन' और अपनी जमीन' कहानियों में समाज में बेटे को जितना प्रधानता दिया जाता है और बेटियों को जितनी हीन दृष्टि से देखते

हैं – इस समस्या को वर्णन किया है । आज समाज में बेटी को बोझ समझी जा रही है । दहेज प्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है । लडकी के जन्म से ही मॉ–बाप इस चिंता में डूब रहते हैं । विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ–बाप कर्ज में डूब रहते हैं । इस समस्या को 'सूकी बयडी' कहानी में वर्णन किया है । लडकी का विवाह देर होने से लडकी और उसके मॉ–बाप को सगे संबंधियों से ताने सुनने पडते है । 'जाने कब' कहानी इस समस्या संकेत है । अगर लडकियॉ सुन्दर और गुणी हो तो गरीब होते हुए भी कही न कही रिश्ता हो ही जाता है । अगर ऐसा न हुआ तो लडका ढूँढना मुश्किल हो जायेगा । इस समस्या को 'बडे लोग' कहानी में वर्णन किया है । विवाह पश्चात जब लडकी बहु बनकर ससुराल में आती है तब मानों उस घर का सारा काम उसी का इन्तजार में हैं । कदम रखते ही घर की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमार पडने पर भी उसे काम करना पडता है । इस समस्या को 'अपने–अपने लोग' कहानी में वर्णित है । विवाहित महिला ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठीक नहीं माना जाता है । हमारी पुरानी रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुराल छोडना चाहिए वहॉ के कष्टों और दुखों को सहना उसका नसीब माना जाता है । इसी समस्या को 'अम्मा' कहानी में विश्लेषण है । 'अपने–अपने दायरे' कहानी में नारी की असहाय स्थिति का चित्राण किया है । पति कितना भी अत्याचार करें उसे केवल उसके आश्रय में हीं पडे रहना होता है, क्योंकि पत्नी आर्थिक रूप से पति के उपर ही निर्भर रहती है । 'चमडे का खोल' कहानी में पति द्वारा परित्यक्त नारी की मार्मिक दशा का चित्रण किया है । सारी जिम्मेदारियॅ खतम होने के बाद जब पुरूष किसी स्त्री से जुड जाता है, तब उस पत्नी की क्या स्थिति हो जाती है? इस समस्या का वर्णन किया है ।हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिशाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मॉ का दर्जा हासिल कर लेती है । इसी समस्या को कहानी में वर्णन किया है । दहेज न दे सकने के कारण माता–पिता बेटी को किसी तरह शादी करके हाथ धोना चाहते हैं । उस समय वे उम्र में काफी बडे व्यक्ति से उसका विवाह करा देते हैं । इससे दाम्पत्य जीवन संतुष्ट नहीं हो पाता है । 'नंगी ऑखोंवाला रेगिस्तान' कहानी में इस समस्या को वर्णन किया है । हमारे समाज में पति के देहान्त के बाद पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं है । उसका सजना संवारना और शुभ कार्यों में शामिल होना सिर्फ पति के जीवित रहने तक ही सीमित है । 'वीराने' कहानी में इस समस्या को चित्रण किया है । पुरूष की निगाह में औरत सिर्फ वासना को तृप्त करने का

साधन है तो ससुराल के अन्य सदस्यों के लिए वह नौकरानी है । 'पत्थर वाली गली' कहानी में इस समस्या का वर्णित है ।

मध्यप्रदेश के रत्लाम जिले से एक सौ पचास किलोमीटर दूर पर बांछडा जाति के लोग रहते हैं, ये अपने परिवार की लडकियों से वेश्वावृत्ति करवाते हैं । यहाँ के पुरूष आलसी और स्वप्न विलासी है । रीति रिवाज और देवो के नाम पर अनेक लडकियों का यौन शोषण होता है । जवान होते–होते किसी लैंगिक बीमारी के कारण इनका देहांत हो जाता है । मेहरून्निासा परवेज ने इन लडकियों की स्थिति को अपनी कहानियों में उजागर किया है, जिसका विश्लेषण 'ओढना', खेलावडी, जूठन, और जुगुनू' में इस समस्या को वर्णन किया है ।

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में नारी जीवन में आये अनेक मोडों को, अपने जीवन के यथार्थ पहलुओं और अनुभवों से जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । मेहरून्निसा स्वयं जो अनुभव किया हैं उसी संवेदना को दूसरों की वेदना से मिलाकर अपनी साहित्य रचना की । उसकी साहित्य लेखन संवेदानात्मक है ।

,,,

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी चेतना

जे.कृष्णवेणी, शोधविद्यार्थी, नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर
श्री के.श्रीकृष्णा, विभागाधिपति, हिन्दी विभाग, नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर

भारत में नारियों की स्थिति प्राचीन–काल से अब तक बहुत शोचनीय है । यूरोपिय देशों की अपेक्षा भारतीय नारी अत्यधिक पिछडी हुई है । वह सामाजिक बंधनों और रूढियों में बॉधी हुई जी रही है । भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ–साथ भारतीयों में नवचेतना का आरंभ हुआ । पुनरूत्थान की भावना से लोगों ने नारी की शोचनीय स्थिति की ओर ध्यान दिया और फिर नारी संबंधनी सुधारवादी आंदोलनों का सूत्रपात हुआ । इसके बाद नारियॉ स्वयं भी अपनी शिक्षा, सामाजिक हैसियत और अधिकारों के प्रति सजग हो उठीं ।

स्त्री शिक्षा ने नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक तो बनाया ही, बल्कि उसे स्वयं के अस्तित्व और व्यक्तित्व के प्रति भी सजग बनाया । पहले घर के सीमित दायरे में रहती थी । शिक्षा ने उनको बाहर आने के लिए राह दिखाई । शिक्षा के परिणामस्वरूप नारी में आत्मसम्मान की भावना का समावेश हुआ ।

कला और साहित्य ने कभी भी नारियों की उपेक्षा नहीं की है । प्रत्येक राष्ट्, साहित्य और प्रगतिशील कलाकार ने नारी की महत्ता को स्वीकार किया है । हिन्दी साहित्य में नारी–जीवन की अभिव्यक्ति की ओर साहित्यकारों का ध्यान स्वातंत्रयोत्तर काल के उपरान्त विशेष रूप से बढता चला है । साहित्यकार का समाज से अभिन्न सम्बन्ध होता है और उसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह समाज में हो रहे परिवर्तनों पर अपनी पैनी दृष्टि निरन्तर रखता है अथवा नहीं । समाज के यथार्थ के जीवन्त अभिव्यक्ति करने वाला साहित्यकार लोकप्रियता प्राप्त करता है । कथा साम्राट प्रेमचन्द समाज के यथार्थ के चितरे होने के ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं ।

समकालीन कहानी अपने समय के परिवेश को समग्रता से उद्घाटित करती हुई अपनी पूर्ववर्ती कहानी से काफी भिन्नता रखती है । समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्गीय–चेतना की कथा–लेखिका के रूप में मेहरून्निसा परवेज का महत्वपूर्ण स्थान है । उनकी कहानियों में मुस्लिम समाज में व्याप्त अनाचार, दिन–ब–दिन टूटते जीवनमूल्य और आर्थिक विपन्नता का सहज परिवेश देखा जा सकता है । नारी के पीडा भरे जीवन के प्रति लेखिका को गहरी सहानुभूति है । लेखिका ने अपनी सभी कहानियों में नारी की व्यथा–कथा को विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया है । पुत्री, बहन, पत्नी, मॉ, विधवा, वेश्या जैसे नारी के अनेक रूप मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में मिलते हैं ।

अपनी कहानियों में मेहरून्निसा परवेज ने अपने नारी चरित्रों को निराधार मान्यताओं और मूल्यों से संघर्ष करते दिखाया हैं उन्होंने ऐसे मूल्यों और मान्यताओं का विरोध कराया है जो नारी को अशिक्षित, अधिकारहीन और दयनीय बनाने के लिए उत्तरदायी हैं । उनके 'समर' शीर्षक कहानी संग्रह की

'जीवनमंथन', 'जगार' तथा 'खेलवाडी' तीन ऐसी महत्वपूर्ण कहानियॉ हैं जिनके नारी चरित्र नंदिता, गोमती और लालमणि ऐसी प्रखर नारियॉ हैं जो परम्परागत मान्यताओं और मूल्यों की धज्जियॉ उडाने के लिए घर की चारदीवारी से निकल पडी हैं । इन नारी चरित्रों की चेतना जाग गयी है और ये तब तक संघर्ष के लिए कटिबद्व हैं जब तक इन्हें वांछित नहीं प्राप्त हो जाता ।

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों की नारी पात्रों में दादी, नानी और यहॉ तक कि मॉ प्रायः अशिक्षित हैं । कुछ कहानियों में शिक्षित पुत्रियॉ नौकरी कर घर का खर्च चलाती हैं और उन्हें घर के अन्य सदस्यों की किसी रोक–टोक की परवाह नहीं होती । 'जीवनमंथन' की विधवा नंदिता शिक्षित है परन्तु झूठी मान्यताओं और मूल्यों की डर से घर में पडी रहती है । पर वह तब चेतती है जब उसकी सहेली शीला और एक सहपाठी महेश उसे विभिन्न तर्क देकर झकझोरते हैं

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों की नारी पात्रों की जो शैक्षिक स्थिति है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उनकी कहानियों की नारी पात्र परिवार में पति की बराबरी का अधिकार चाहती हैं । सामान्य से सामान्य नारी पात्र भी यह समझ चुकी है कि न्याय, कानून और नैतिकता की दृष्टि से नारी पुरूष से कहीं भी कमतर नहीं है । कम से कम परिवार और बच्चों के मामले में उसका महत्व पति से कम नहीं हो सकता । इस भावना से युक्त मेहरून्निसा परवेज की अनेक कहानियों की नारियों को अपमान, तिरस्कार और यहॉ तक की तलाक का शिकार भी होना पडता है । नारी पात्र अशिक्षित होते हुए भी सम्मान चाहने लगे हैं । उन्हें यद्यपि यह ज्ञात है कि अपने पैरों पर खडा होने की योग्यता उनमें नहीं हैं तथापि अधिकार हीन होकर पडे रहना भी स्वीकार नहीं है । मेहरून्निसा परवेज की 'बूँद का हक' कहानी की रेनू की मॉ पति का घर छोडकर कमाने का विचार लेकर निकल जाती है । 'अयोध्या से वापसी' कहानी की नीरा लम्बे समय तक मायके में रहने के कारण पति के ताने सुनती है लेकिन अधिकार प्राप्ति की चाह को छोडकर पति के घर वापस यह मानकर नहीं आना चाहती कि ''किसी भी युग में झगडे के बाद पति के घर लौटने पर नारी को सम्मान नहीं मिला । इससे पहले की अंधे होकर तुम मुझे निकालो, मैं खुद जा रही हूँ, अब कभी न लौटने के लिए ।''

इस प्रकार मेहरून्निसा परवेज ने अपनी तमाम कहानियों में नारी को माता–पिता अथवा पति के द्वार किये जाने वाले अत्याचारों, आर्थिक संकट तथा समाज द्वारा उत्पन्न की जाने वाली समस्यओं के विरूद्व संघर्ष करते दिखाया है । इस संघर्ष में नारी ने अपनी नारीत्व से सम्बन्धित प्रमुख विशेषताओं को ठुकराने में तनिक भी परवाह नहीं की है ।

———

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी व्यथा–संघर्ष–चेतना की अभिव्यक्ति

जे.कृष्णवेणी,
शोधविद्यार्थी,
आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय,
गुंटूर ।

श्री जी.श्रीकृष्ण,
विभागाधिपति, हिन्दी विभाग,
आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय,
गुंटूर ।

भारत में प्राचीन वैदिक काल में स्त्री को पुरूष के ही समान अधिकार प्राप्त थे । वह अपने इन अधिकारों का उपभोग भारत में मुस्लिम शासन के स्थापित होने से पूर्व तक करती रही । पर मुस्लिम शासन काल में, नारी का व्यक्तित्व घर की चार दीवारी तक सीमित हो गया । ब्रिटीश शासन काल में भी नारी पराधीन की स्थिति में रही । तब से लगातार उसकी स्थिति दिन–प्रतिदिन खराब होती चली आयी । पुरूष के मन में स्त्री के प्रति हीनता की भावना दिन–ब–दिन बढती गयी । फलतः स्त्री के प्रति उत्पीडन आजीवन चलनेवाली एक सामाजिक रीति बन चुकी है । पहले–पहल वह बाल–विवाह, विधवा विवाह निषेध, शिक्षा से वंचित, विधावाओं का अभिशप्त जीवन, परदा प्रथा आदि समस्याओं से पीडित थी । स्वातंत्र आने के बाद कुछ समाज सुधारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप से समस्याएँ कुछ हद तक दूर हो गयी । पर उसके प्रति हीनता की भावना और भी बढ गयी । वह हर दिन जिन्दगी और मौत के बीच में जूझ रही है । वह पुरूष के लिए एक खिलौना समझा जाने लगा । उसे अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं हैं । दहेजप्रथा, वेश्यावृत्ति, मानसिक शोषण, बलात्कार, भाई–बन्धुओं से शोषण, अनमेल–विवाह आदि समस्याओं से वह पीडित हैं

भारत के समकालीन महिला कहानिकारों में परवेज का स्थान

इसी समय साठोत्तर कथा जगत में अनेक महिला कथाकारों का उदय हुआ है, जिन्होंनं देश में व्याप्त निम्न वर्ग की शोषित–सामाजिक व्यवस्था और निम्न मध्यवर्गीय नारियों की दर्द भरी वाणी एवं पुकार को पहचान लिया, और वे स्वयं अनुभव किये दुख दर्दों को आधार बनाकर उन्होंने साहित्य लिखे और अपने कथा साहित्य के द्वारा उन परिस्थितियों को बदलना भी चाहा । इनमें कृष्ण सोबती, शशिप्रभा शास्त्री, मन्नूभडारी, उषा प्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज, कृष्णसोबती, निरूपमा सोबती, शशिप्रभा शास्त्री, मन्नूभंडारी, उषा प्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज, कृष्ण सोबती, निरूपमा सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सूर्यबाला, मृणाल पांडे, कृष्णा अग्निहोत्री, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल आदि उल्लेखनीय है ।

मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की कथा लेखिका श्रीमती मेहरून्निसा परवेज इन महिला कथाकारों में अग्रगण्य है । उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है । भारतीय समाज में सबसे अधिक पीडित, प्रताडित एवं बन्धन ग्रस्त जीव नारी है । 'हमारे समाज में नारी अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहती है । आज शोषित या पीडित नारियॉ सर्वत्र उपलब्ध है । पुरूष की नजर में स्त्री मात्र एक शरीर है, वासना पूर्ति का एक साधन है । कहने का आशय है कि नारी सदा शोषण की चक्र में पिसती रही है, महिला लेखिका परवेज ने अपने कथा साहित्य में ऐसी ही शोषित व पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया है ।

आपके प्रमुख कहानी संग्रह हैं : 'आदम और हव्वा' ,'टहनियों पर धूप' ,'गलत पुरूष' हैं , 'फालगुनी' था ,'अंतिम चढाई' 'एक और सैलाब' सोने का बेसर, अयोध्या से वापसी ,'रिश्ते' 'ढहता कुतुबमीनार' , 'समर' आदि आपके पमुख कहानी संग्रह है । आपके प्रमुख उपन्यास है – 1.ऑखों की दहलीज 2.उसका घर 3.कोरजा 4. अकेला पलश 5.समरांगण 6. प्रासंग । रमजान की ईद, कुत्तों का ट्रैनिंग कालेज, मासूम ऑखों के सवाल, आर्थिक–सामाजिक, नैतिक घुटन, बस्तर मंडई, बॉछडा – रोशनी की पहली दस्तक, नागफनी का नन्दन कानन आदि आपके लेख और संस्मरण है । श्रीमती मेहरून्निसा परवेज पिछले चार दशकों से साहित्य सेवा में कार्यरत है

परवेज की कहानियों में चित्रित नारी व्यथा

मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य के मुख्य विषय हैं –मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्याऍ, शोषित एवं पीडित नारी की दुर्दशा, आर्थिक सामाजिक समस्याऍ, प्रेम के बदलते दृष्टिकोण आदि उनकी कहानियॉ जीवन की कटु सच्चाइयों से जूझती हुई भयावह से साक्षात्कार कराती है । श्रीमती मेहरून्निसा परवेज की कहानियॉ नारी पात्र प्रधान है । उसने विवाह के संबंध में अनेक बदलते दृष्टिकोणों को अपने कहानियों में स्पष्ट किया है । विवाह पूर्व और विवाह के बाद नारी जिस प्रकार समस्याओं को सामना करती हैं, उन समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रण किया हैं । व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतन्त्रतता, सामाजिक शोषण, दहेज प्रथा, परदा प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल–विवाह, बांझपन का बोझ, अनमेल विवाह विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक शोषण, लैंगिक शोषण, अनब्याही नारी की समस्या, प्रेमी द्वारा छली जाना, काम–काजी युवती का विवाह न होना आदि कुछ ऐसी समस्यायें है जिनका सामना पूरी दुनिया की स्त्रीयों को करना पड रहा हैं। ऐसी ही समस्याओं को लेकर परवेज ने अपनी कहानियों को लिखी ।

'जमाना बदल गया' भोगे हुए दिन' और अपनी जमीन' कहानियों में समाज में बेटे को जितना प्रधानता दिया जाता है और बेटियों को जितनी हीन दृष्टि से देखते हैं – इस समस्या को वर्णन किया है । आज समाज में बेटी को बोझ समझी जा रही है । दहेज प्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है । लडकी के जन्म से ही मॉ–बाप इस चिंता में डूब रहते हैं । विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ–बाप कर्ज में डूब रहते हैं । इस समस्या को 'सूकी बयडी' कहानी में वर्णन किया है । लडकी का विवाह देर होने से लडकी और उसके मॉ–बाप को सगे संबंधियों से ताने सुनने पडते है । 'जाने कब' कहानी इस समस्या संकेत है । अगर लडकियॉ सुन्दर और गुणी हो तो गरीब होते हुए भी कही न कही रिश्ता हो ही जाता है । अगर ऐसा न हुआ तो लडका ढूँढना मुश्किल हो जायेगा । इस समस्या को 'बडे लोग' कहानी में वर्णन किया है । विवाह पश्चात जब लडकी बहु बनकर ससुराल में आती है तब मानों उस घर का सारा काम उसी का इन्तजार में हैं । कदम रखते ही घर की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमार पडने पर भी उसे काम करना पडता है । इस समस्या को 'अपने–अपने लोग' कहानी में वर्णित है । विवाहित महिला ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठीक नहीं माना जाता है । हमारी पुरानी रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुराल छोडना चाहिए वहॉ के कष्टों और दुखों को सहना उसका नसीब माना जाता है । इसी समस्या को 'अम्मा' कहानी में विश्लेषण है । हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिशाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मॉ का दर्जा हासिल कर लेती है । इसी समस्या को कहानी में वर्णन किया है । दहेज न दे सकने के कारण माता–पिता बेटी को किसी तरह शादी करके हाथ धोना चाहते हैं । उस समय वे उम्र में काफी बडे व्यक्ति से उसका विवाह करा देते हैं । इससे दाम्पत्य जीवन संतुष्ट नहीं हो पाता है । 'नंगी ऑखोंवाला रेगिस्तान' कहानी में इस समस्या को वर्णन किया है । हमारे समाज में पति के देहान्त के बाद पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं है । उसका सजना संवारना और शुभ कार्यों में शामिल होना सिर्फ पति के जीवित रहने तक ही सीमित है । 'वीराने' कहानी में इस समस्या को चित्रण किया है । पुरूष की निगाह में औरत सिर्फ वासना को तृप्त करने का साधन है तो ससुराल के अन्य सदस्यों के लिए वह नौकरानी है । 'पत्थर वाली गली' कहानी में इस समस्या का वर्णित है ।

मध्यप्रदेश के रत्लाम से नीमच तक एक सौ पचास किलोमीटर के राज्यमार्ग में बॉछडा जाति के लोग रहते हैं । ये अपने परिवार की लडकियों से वेश्यवृत्ति करवाते हैं । यहॉ के पुरूष आलसी और स्वप्न विलासी है । रीति के अनुसार घर की बडी बेटी को धंधे पर बिठाया जाता है लेकिन अब स्वार्थवश घरवाले छोटी उम्र की लडकियों

को भी इस व्यापार में लगा देते हैं । इन लडकियों को 'खेलवाडी' कहते हैं, जिसका अर्थ है जिससे खेला जाय' । रीतिरिवाज और देवी के नाम पर अनेक लडकियों को यौन शोषण होता है । जवान होते–होते किसी लैंगिक बीमारी के कारण इनका देहान्त हो जाता है । मेहरून्निासा परवेज ने इन लडकियों की स्थिति को अपने कहानियों में उजागर किया है जिसका विश्लेषण 'ओढना, खेलावडी, जूठन, और जुगुनू इस समस्या को वर्णन किया है ।

परवेज की कहानियों में नारी–संघर्ष–चेतना की अभिव्यक्ति

परिवारिक समस्याओं से जूझकर अपना अस्तित्व कायम रखनेवाली नारी चेतना उनकी रचनाओं की सबसे बडी विशेषता है । महेन्द्र रघुवंशी के अनुसार 'मेहरून्निसा परवेज की नारियॉ समय आने पर पति को भी त्याग सकती है । समाज की परंपराओं को तोड सकती हैं । पति और परिवार से विद्रोह करती हैं । क्योंकि अब हमारे समाज में नारियों ने जीवन का असली रूप देख लिया है, अब वह पुरूष पर आश्रित नहीं है । उसने जीने की राह ढूँढ ली है। जो अपना सब कुछ समर्पित कर देती है, उसे ही बेघर कर दिया जाता है, इसलिए वह चाहती है कि, उसका अपना स्वतंत्र घर हो ।

देहरी की खातिर, कोई नहीं, ओढना, उसका घर, जूठन कहानियों में स्त्री का विद्रोह रूप दिखाई पडती है । नारी की उन्नति के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण सूचक है । आर्थिक बल और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए यह एक हथियार है । वह पति या पिता के अभाव में घर का संचालन करती है । उसमें आत्मविश्वास पैदा होता है । 'अम्मा', 'ढहता कुतुब मीनार' इसी आदर्श को वर्णन किया है । आशय यह है कि आज स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व है इसलिए वह पुरूष सत्ता को नकारती है, फिर भी शोषण की परम्परा कायम रही है । नारीगत समस्याओं और शोषण के लिए उत्तरदायी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ही है. जिसका विस्तृत विवेचन मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में उपलब्ध है ।

उपसंहारः

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में नारी जीवन में आये अनेक मोडों को, जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अपनी कहानियों में उन्होंने निम्न वर्ग, मध्यवर्ग के नारी पात्रों का चयन किया है । नारी के शोषण, बदलते परिवेश के साथ उसकी नयी समस्याओं, उसके विभिन्न परंपरागत रूप :: बहन, प्रेमिका, पत्नी और मॉ :: , नयी पीढी की बदलती हुई आकांक्षाओं के अनुरूप नारी का संघर्षात्मक एवं विद्रोही स्वरूप, उसके आक्रोश और अधिकारों के प्रति सजगता को उन्होंने वाणी दी है ।

मेहरून्निसा परवेज के कहानियों में स्त्रीयों का शोषण और नारी मुक्ति संघर्ष

जे.कृष्णवेणी, शोधविद्यार्थी, नागार्जुन विष्वविद्यालय, गुण्टूर, आन्धपदश

स्त्रीवादी परंपरा को लेकर अनेक महिला कथासाहित्यकार हिन्दी साहित्य जगत में आयी और अपनी लेखन शक्ति द्वारा स्त्रीयों पर होनेवाले अत्याचार एवं शोषण पर तीखा प्रहार किया है । नारी जीवन के यथार्थ को गहराई तक वर्णन किया है । अपने लेखन में लेखिकाओं ने शोषित स्त्री की पीडा को ही स्वर नहीं दिया उसे विरोध और आकोश भी किये । ये स्त्री जीवन की सच्चाई तक पहुँचती है और उसकी पीडा से साक्षात्कार करते हुए, भोगे हुए यथार्थ और उससे उपजी व्यथा से मुक्ति का प्रभावी प्रयत्न करती है । ये लेखिकाएँ स्वयं अनुभव किये दुख दर्दों को आधार बनाकर उन्होंनें साहित्य लिखे और अपने कथासाहित्य के द्वारा उन परिस्थितियों को बदलना भी चाहा । इनमें कृष्ण सोबती, शशीप्रभा, मन्नूभण्डारी, उषाप्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज, कृष्ण सोबती, निरूपमा सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सूर्यबाला, चित्रामुदगल आदि प्रसिद्ध है । जीवन की हर परिस्थिति से गुजरने के पश्चात, उन परिस्थितियों से अनुभूत क्षणों को स्मृति में सजोकर उन्हें अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त करने में ये लेखिकाएँ बहुत हद तक सफल हुई है ।

मुस्लिम मध्यवर्ग चेतना की कथा लेखिका श्रीमती मेहरून्निसा परवेज इन महिला कथाकारों में अग्रगण्य है । आप भी विविधोन्मुखी आधुनिक नारी जीवन के यथार्थ को अपने कथासाहित्य में प्रभावी ढंग से वर्णन किया है । उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है । भारतीय समाज में सबसे अधिक पीडित, प्रताडित एवं बन्धनग्रस्त जीव नारी है । हमारी समाज में नारी अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहती है । समाज में एक ओर पुरूषों को स्वच्छन्द जीवन भोगने के लिए अनेक सामाजिक सुविधाएँ उपलब्ध रही है । दूसरी ओर नारी घर की चहार दीवारों में बन्द होकर पुरूषों के हाथ की कठपुतली बनी रही है । पुरूष केन्द्रित समाज तथा परिवार नारी को हीन समझकर उसे समानाधिकारों से वंचित रखा गया है । फलतः वह हीन भावना ग्रस्त होकर आजीवन सामाजिक अत्याचार मौन रूप से सहती रहती है । कहने का आशय है कि नारी सदा शोषण की चक में पिसती रहती है, महिला लेखिका परवेज अपने कथा साहित्य में ऐसी ही शोषित व पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया है ।

मेहरून्निासा परवेज का अनुभव संसार बहुत गहरा है । दर्द की पहचान उन्होंने अपनी जीवन यात्रा से ही पायी थी । अपने बेटे की मृत्यु ने उसे अंधकार में डाल दिया । दूसरों के दर्द को अपने में वे समेट लेती है । क्योंकि उन्होंने अपनी जिन्दगी में काफी दुख दर्द का अनुभव किया था । इसी वेदना में दूसरों की वेदना और भावनाओं को जोडकर कथा साहित्य लिखा लिया । संवेदनात्मक नारी होने के कारण उनका साहित्य भी नारी संवेदना से भर गया है ।

मेहरून्निासा परवेज की कहानियॉ नारी पात्र प्रधान है । उसने विवाह के संबंध में अनेक बदलती दृष्टिकोणों को अपनी कहानियों में स्पष्ट किया है । विवाह पूर्व और विवाह के बाद नारी जिस प्रकार समस्याओं को सामना करती है, उन समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रण किया है । व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतंत्रता, सामाजिक शोषण, दहेज प्रथा, परदा प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल–विवाह, बांझपन का बोझ, अनमेल विवाह विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक शोषण, लैंगिक शोषण, अनब्याही नारी की समस्या, प्रेमी द्वारा छली जाना, काम–काजी युवती का विवाह न होना आदि कुछ ऐसी समस्यायें है ं जिनका सामना पूरी दुनिया की स्त्रीयों को करना पड रहा हैं। ऐसी ही समस्याओं को लेकर परवेज ने अपनी कहानियों को लिखी ।

'जमाना बदल गया' भोगे हुए दिन' और अपनी जमीन' कहानियों में समाज में बेटे को जितना प्रधानता दिया जाता है और बेटियों को जितनी हीन दृष्टि से देखते हैं – इस समस्या को वर्णन किया है । आज समाज में बेटी को बोझ समझी जा रही है । दहेज प्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है । लडकी के जन्म से ही मॉ–बाप इस चिंता में डूब रहते हैं । विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ–बाप कर्ज में डूब रहते हैं । इस समस्या को 'सूकी बयडी' कहानी में वर्णन किया है । लडकी का विवाह देर होने से लडकी और उसके मॉ–बाप को सगे संबंधियों से ताने सुनने पडते है । 'जाने कब' कहानी इस समस्या संकेत है । अगर लडकियॉ सुन्दर और गुणी हो तो गरीब होते हुए भी कही न कही रिश्ता हो ही जाता है । अगर ऐसा न हुआ तो लडका ढूँढना मुश्किल हो जायेगा । इस समस्या को 'बडे लोग' कहानी में वर्णन किया है । विवाह पश्चात जब लडकी बहु बनकर ससुराल में आती है तब मानों उस घर का सारा काम उसी का इन्तजार में हैं । कदम रखते ही घर की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमार पडने पर भी उसे काम करना पडता है । इस समस्या को 'अपने–अपने लोग' कहानी में वर्णित है । विवाहित महिला ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठीक नहीं माना जाता है

। हमारी पुरानी रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुराल छोडना चाहिए वहॉ के कष्टों और दुखों को सहना उसका नसीब माना जाता है । इसी समस्या को 'अम्मा' कहानी में विश्लेषण है । 'अपने–अपने दायरे' कहानी में नारी की असहाय स्थिति का चित्राण किया है । पति कितना भी अत्याचार करें उसे केवल उसके आश्रय में हीं पडे रहना होता है, क्योंकि पत्नी आर्थिक रूप से पति के उपर ही निर्भर रहती है । 'चमडे का खोल' कहानी में पति द्वारा परित्यक्त नारी की मार्मिक दशा का चित्रण किया है । सारी जिम्मेदारियॅ खतम होने के बाद जब पुरूष किसी स्त्री से जुड जाता है, तब उस पत्नी की क्या स्थिति हो जाती है? इस समस्या का वर्णन किया है ।हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिशाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मॉ का दर्जा हासिल कर लेती है । इसी समस्या को कहानी में वर्णन किया है । दहेज न दे सकने के कारण माता–पिता बेटी को किसी तरह शादी करके हाथ धोना चाहते हैं । उस समय वे उम्र में काफी बडे व्यक्ति से उसका विवाह करा देते हैं । इससे दाम्पत्य जीवन संतुष्ट नहीं हो पाता है । 'नंगी ऑखोंवाला रेगिस्तान' कहानी में इस समस्या को वर्णन किया है । हमारे समाज में पति के देहान्त के बाद पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं है । उसका सजना संवारना और शुभ कार्यों में शामिल होना सिर्फ पति के जीवित रहने तक ही सीमित है । 'वीराने' कहानी में इस समस्या को चित्रण किया है । पुरूष की निगाह में औरत सिर्फ वासना को तृप्त करने का साधन है तो ससुराल के अन्य सदस्यों के लिए वह नौकरानी है । 'पत्थर वाली गली' कहानी में इस समस्या का वर्णित है ।

मध्यप्रदेश के रत्लाम जिले से एक सौ पचास किलोमीटर दूर पर बांछडा जाति के लोग रहते हैं, ये अपने परिवार की लडकियों से वेश्वावृत्ति करवाते हैं । यहॉ के पुरूष आलसी और स्वप्न विलासी है । रीति रिवाज और देवी के नाम पर अनेक लडकियों का यौन शोषण होता है । जवान होते–होते किसी लैंगिक बीमारी के कारण इनका देहांत हो जाता है । मेहरून्निासा परवेज ने इन लडकियों की स्थिति को अपनी कहानियों में उजागर किया है, जिसका विश्लेषण 'ओढना', खेलावडी, जूठन, और जुगुनू' में इस समस्या को वर्णन किया है ।

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में नारो जीवन में आये अनेक मोडों को, अपने जीवन के यथार्थ पहलुओं और अनुभवों से जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । मेहरून्निसा स्वयं जो अनुभव किया हैं उसी संवेदना को दूसरों की वेदना से मिलाकर अपनी साहित्य रचना की । उसकी साहित्य लेखन संवेदानात्मक है ।

,,,